उपनिषद्-त्रयी

जन-ज्ञान-प्रकाशन
नई दिल्ली-५

"दयानन्द-संस्थान" नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित

उपनिषद्-त्रयी के प्रस्तुत कर्ता

प्रसिद्ध आर्य विचारक और चिन्तक

श्री पं शिवदयालु जी आर्य

मुद्रक—[illegible] प्रिण्टर्स, पहाड़ी धीरज, देहली-६

ओ३म्

जन–ज्ञान–प्रकाशन का ७२वाँ पुष्प

उपनिषद्–त्रयी

यजुर्वेद के ३१-३२ एवं ३६वें
अध्याय की हिन्दी
व अंग्रेजी में
प्रभावपूर्ण व्याख्या

लेखक—श्री पं. शिवदयालु जी आर्य

जन-ज्ञान-प्रकाशन
नई दिल्ली ५

प्रकाशक

जन-ज्ञान-प्रकाशन
१५९७, हरध्यानसिंह मार्ग
करौलबाग नई दिल्ली ५

दूरभाष — ५६८६३९

संपादक राकेश रानी

प्रथम संस्करण : अक्टूबर १९७१

मूल्य : ६० पैसे
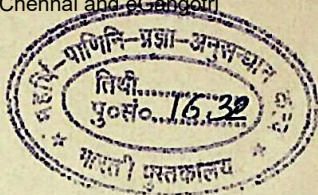
पुरुषोपनिषद् प्राक्कथन

यजुर्वेद अध्याय ३१ को, जिसका देवता पुरुष है, हमने यहाँ पुरुषोपनिषद् के रूप में व्याख्यात किया है। इसी प्रकार किसी समय यजुर्वेद का ४० वां अध्याय ईशोपनिषद् के नाम से व्याख्यात किया गया है। जिस प्रकार महाभारत में से केवल कृष्ण गीता ही नहीं अपितु विदुर गीता, भीष्म गीता आदि अनेक गीताएँ व्याख्यात की जा सकती हैं उसी प्रकार वेदों में से केवल ईशोपनिषद् ही नहीं अपितु पुरुषोपनिषद्, ब्रह्मोपनिषद् आदि व्याख्यात की जा सकती हैं।

ईशोपनिषद् के अंतिम भाग में दो मंत्रों में किञ्चित हेर-फेर किया गया है किन्तु हमने, जिस प्रकार शुक्ल यजुर्वेद संहिता में २२ मंत्र विद्यमान हैं, उनको ज्यों का त्यों यहाँ रक्खा है।

ईशोपनिषद् का ऋषि दीर्घतमा है तो इस पुरुषोपनिषद् का मंत्र १-१६ का ऋषि नारायण एवं मंत्र १७-२२ का ऋषि उत्तर नारायण है। यह ऋषि कब और कहाँ हुए और कब संहिता में इनके नाम अंकित किये गये इसको खोज निकालना कठिन काम है।

ईशोपनिषद् का देवता प्रधानतया आत्मा है केवल मन्त्र ४ का देवता ब्रह्म उल्लिखित है तो इस सम्पूर्ण उपनिषद् का देवता आदि से अंत तक पुरुष ही है। ईशोपनिषद् के मंत्र २ व ३ में आत्मा शब्द का अर्थ परमात्मा परक है और शेष मंत्रों में अर्थ जीवात्मा परक है। इसी प्रकार इस उपनिषद् में पुरुष शब्द कहीं परमात्मा वाचक है। कहीं जीव, संसार व समाज वाचक है। इस शरीर रूपी पुरी में निवास-करने और इस पर शासन करने की दृष्टि से जीवात्मा को पुरुष कहा जाता है तो ब्रह्माण्ड रूपी पुरी में रमण करने और उस पर शासन करने की दृष्टि से पुरुष शब्द परमात्मा वाचक है। पुरु अव्ययपूर्वक षूङ्. प्रसवे धातु से जो पुरुष शब्द बनता है वह संसार, समाज आदि का वाचक है।

चारों वेद ईश्वरीय ज्ञान ग्रंथ मान्य हैं। मानव सृष्टि के आदि में मानव कल्याणार्थ जिस ज्ञान का प्रादुर्भाव श्रेष्ठ आत्माओं के अन्दर हुआ है, उसकी संज्ञा वेद है। वेद शब्द स्वतः ही ज्ञानार्थक है। ज्ञान की तीन धाराएं हैं—आध्यात्मिक, आधिदैविक एवं आधिभौतिक। स्थूल, सूक्ष्म एवं कारण शरीरों के उत्थानार्थ अथवा अन्न, प्राण, मन, विज्ञान और आनंदमय कोषों की शुद्धि करने की दृष्टि से उस परम कारुणिक पिता ने वेद ज्ञान का प्रादुर्भाव किया है। मानवों के व्यक्तिगत एवं समष्टिगत उत्थान का बोध कराने वाला ज्ञान भी वेद ही है।

यजुर्वेद कर्मकाण्ड के नाम से प्रसिद्ध है। उसमें मानव उत्थान संबंधी सब प्रकार के कर्मों का बोध कराया गया है। केवल यज्ञ योग का नाम ही कर्म नहीं है। मानव की शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक उन्नतियों का बोध कराना भी कर्मकाण्ड से अभीप्सित है।

यजुर्वेद के ३१ वें अध्याय में, जिसको हमने यहाँ पुरुषोपनिषद् के नाम से व्यवहृत किया है, इसमें उस पूर्ण ब्रह्म परम पुरुष परमात्मा का वर्णन है, उसके चार पादों का निरूपण है। पृथिवी, जल, सूर्य, रस अन्न, वनस्पति, पशु-पक्षियों की सृजना, मानवों की उत्पत्ति और उनके लिये वेद ज्ञान का प्रादुर्भाव, मानव-समाज के चार नैसर्गिक विभागों का चित्रण, प्रजापति की सर्वव्यापकता, मर्त्य का दैवीकरण, त्याग भावना का महत्त्व, ब्रह्म प्राप्ति का अद्वितीय मार्ग, परम पुरुष की दिव्य ज्योति का दर्शन आदि विषयों का अनुपम वर्णन है।

मन्त्र के शब्दार्थ एवं भावार्थ के बाद उसका अंग्रेजी अनुवाद भी दिया गया है।

—शिवदयालु

आर्य वानप्रस्थ संन्यास आश्रम

ज्वालापुर (सहारनपुर)
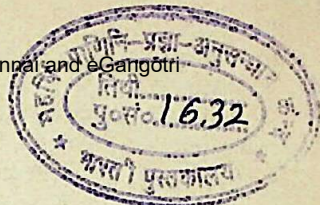
ओं सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
स भूमि सर्वत स्पृत्वा ऽ त्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥१॥

शब्दार्थः—(पुरुषः) ब्रह्माण्ड रूपी पुरी में रमण करने वाला सर्वव्यापक स्वयंभू परमात्मा (सहस्रशीर्षा) अनंत ज्ञान वाला है (सहस्राक्षः) असीम तथा कल्पनातीत दर्शन शक्ति वाला है (सहस्रपात्) महती क्रिया शक्ति वाला है (सः भूमिम् सर्वत स्पृत्वा) उसने इस भूमि अर्थात् ब्रह्माण्ड को सर्व दिशाओं से आच्छादित किया हुआ है (अति अतिष्ठत् दशांगुलम्) वह मानव की हृदय रूपी गुफा में, जहाँ जीवात्मा का स्वयं का निवास है और जहाँ से दशों ज्ञान एवं कर्मेन्द्रियों का सूत्र संचालित होता है, वह परम पुरुष विशेष रूप से विराजमान है। ब्रह्म का साक्षात् दर्शन मानव को हृदय रूपी गुफा में ही होना सम्भव है अतः उसका इस गुफा में विशेष वास बतलाया गया है।

भावार्थ :—जो जन उस परम पुरुष का दर्शन काशी, प्रयाग, बद्री, केदार, रामेश्वरम् आदि में अथवा नाना स्वनिर्मित मूर्तियों में करना चाहते हैं, वह भ्रांति में हैं। सर्वव्यापी होने से वह परम पुरुष सर्व तीर्थों एवं मूर्तियों में भी निश्चित विद्यमान है लेकिन द्रष्टा जीवात्मा का वहाँ अभाव होने से दर्शन सम्भव नहीं। जीवात्मा तो इस शरीरकी हृदयरूपी गुफा निवास करता है, वह दर्शनार्थ किसी मूर्ति में जाने में भी समर्थ नहीं अतः वह तो उसका दर्शन अपने हृदय रूपी गुफा में ही कर सकता है। हृदय रूपी मंदिर में ही ब्रह्म की उपासना सम्भव है। वह पावन प्रभु अपनी अनंत दर्शन शक्ति से मानव के सब संकल्प-विकल्पों को जानता है और उसके सब अच्छे बुरे कर्मों का साक्षी है। उस सर्व-व्यापक परम ब्रह्म की क्रियाशीलता ब्रह्माण्ड में सर्वत्र विद्यमान रहती है। वह जहाँ इस ब्रह्माण्ड के कण-कण में और जीव-जीव में विद्यमान है, वह इनके बाहर भी अनंत आकाश में रमण करने वाला है। उसकी उपासना एवं साक्षात् ज्ञान मानव को हृदय मंदिर में ही होना सम्भव है एतदर्थ उसको अन्यत्र कहीं जाने और उसके खोज करने की

आवश्यकता नहीं। उसके दर्शन के निमित्त मानव को अन्तर्मुखी होना होगा, बाहर के पट बंद कर अंदर के पट खोलने होंगे, निश्चय ही उस परम पुरुष की झाँकी मानव को उसकी अपनी हृदय रूपी गुफा में ही मिलेगी।

The Omni-present Lord has got immense brain power. His vision is vast and His energy unlimited. He all round surronds the whole universe and resides wonderfully in the cavity of the human heart.

पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥२॥

शब्दार्थः—(यत् भूतं) जो कुछ भी भूत काल में उत्पन्न हुआ (यत् च भाव्यं) और जो कुछ भी भविष्य में रचना में आवेगा (इदं सर्वं) और यह सब जो वर्तमान में है (पुरुषः एव) इसको विश्व व्यापी परमात्मा ही रचता है (उत) और निश्चय वह परमात्मा ही (अमृतस्य) मुक्ति मोक्षधाम वा आनंद धाम का भी (ईशानः) शासक वा नियंता है (यत्) और जो (अन्नेन अति रोहति) अन्नादि पदार्थों के आधार पर जीवित रहने और सम्बन्धित होने वाला प्राणी जगत् है, उस पर भी निश्चय उसी का शासन है।

भावार्थः—वर्तमान तो भूत एवं भविष्यत् को जोड़ने वाली कड़ी है। छाया और आतप के बीच की काल्पनिक रेखा के समान है। वर्तमान तो एक क्षण में भूत हो जाने वाला है। अतः भूत, भविष्यत् के कथन में वर्तमान समाया हुआ है। सम्पूर्ण सृष्टि उसके वैश्वानर नामक प्रथम पाद में समाई हुई है। उस पर एक मात्र और निर्बाध शासन उस परम पुरुष का ही है। उसके तैजस और प्रज्ञान पादों पर जिनकी अनुभूति मानव प्रगाढ़ निद्रा, समाधि तथा गंभीर गहन चिंतन तथा मनन में करता है तथा आनंद पाद पर भी जिसमें दिव्य आत्माएँ अर्थात् मुक्त आत्माएँ अपने कारण शरीरों के साथ अव्याहत गति से विचरण करती हैं, निश्चय उसका ही शासन है। स्थूल शरीर में निवास करने वाली आत्माओं पर भी जिनका अन्नादि खाद्य पदार्थों पर ही जीवन निर्भर करता है, उस ही अखंड अविनाशी परम पुरुष का एक छत्र शासन रहता है। उसके शासन के बाहर जाने की कभी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता।

The entire past, present and future universe is only his creation. His domain extends to the hemisphere of immortality as well. He controlls all the beings depending on food (nourishment) as well.
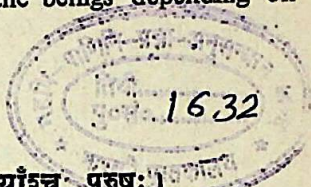
एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥३॥

शब्दार्थः—(एतावान्) यह सब कुछ दृश्य और अदृश्य अथवा व्यक्त व अव्यक्त संसार (अस्य महिमा) इस परम पुरुष के महत्त्व का सूचक है (अतः ज्यायन् च पुरुषः) किन्तु उस परम पुरुष की महिमा तो इससे भी बड़ी और महान् है (विश्वाभूतानि) असंख्य लोक लोकान्तर तथा इन लोकों में निवास करने वाली असंख्य जंगम और स्थावर योनियाँ (अस्य पादः) इस परम पुरुष के एक पाद में अर्थात् वैश्वानर पाद में विद्यमान रहती हैं (अस्य त्रिपाद्) और इसके तीन तैजस्, प्रज्ञान व आनंद पाद (अमृतं दिवि) दिव्य प्रकाश से परिपूर्ण हैं, दिव्य अमृत रूप हैं।

भावार्थः—साधारण मानव परम पुरुष के प्रथम वैश्वानर पाद तक ही सीमित रहता, उसमें विचरण करता है। बारम्बार जन्म लेता और मृत्यु का ग्रास बनता है। स्थूल देह में आता और निर्धारित समय पर अपने सूक्ष्म शरीर के साथ स्थूल देह से प्रयाण कर अन्य स्थूल देह धारण करता है किन्तु ज्ञान यज्ञ का करने वाला ब्रह्माग्नि वा स्वर्ग्याग्नि में यजन करने वाला उसके अन्य तीन प्रकाशमय पादों की क्रमशः अनुभूति लेता और अपने जीवन के लक्ष्य को सिद्ध कर दिव्य अमृतरस का अपनी अन्तरात्मा में आस्वादन करता है।

The whole visible and invisible universe speaks of His grandeur but His glory is much more than this. The entire universe speaks about His first hemisphere only. His further three hemispheres remain in his divine light and blissfulness.

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः ।

ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि ॥४॥

शब्दार्थः—(पुरुषः) परम पावन विश्व व्यापक प्रभु (त्रिपाद् ऊर्ध्वं) वैश्वानर पाद से भिन्न तीन तैजस्, प्रज्ञान और आनंद पादों में (उदैत्) विशेष रूप से उदित हैं अर्थात् प्रकाशमान रहता है (पादः अस्य इह अभवत् पुनः) किन्तु उसके वैश्वानर पाद की अनुभूति तो इस ब्रह्माण्ड में होती है जो नाना रूपों में बारम्बार उदित होता है (ततः विश्वं व्यक्रमात्) वह पूर्ण पुरुष इस सारे ब्रह्माण्ड में व्याप रहा है। वह इस ब्रह्माण्ड को गति देता और अपनी सत्ता से इससे पृथक् भी रहता है (साशन अनशने अभि) यह सारा प्राणी जगत् जो अशने और अनशन वाला है अर्थात् स्थूल देह में अन्नादि का भक्षण करने वाला और सूक्ष्म देह धारण करने की अवस्था में भक्षण से रहित रहता है—इन दोनों अवस्थाओं में भी उसका ही शासन है।

भावार्थः—नाना योनियों में निवास करने वाले अपने स्थूल देह के संरक्षणार्थ योग्य पदार्थों का सेवन करते और स्थूल देह से प्रयाण कर सूक्ष्म शरीर के साथ आकाश में कुछ काल निवास कर पुनः स्थूल देह को प्राप्त होते हैं। योनि परिवर्तन के बाद वह अशन से दूर रहते हैं। इन दोनों अवस्थाओं और कारण शरीर के साथ मुक्तावस्था में रहने वाले जीवों पर भी निश्चय उसका ही शासन रहता है। उस प्रभु के प्रथम वैश्वानर पाद की अनुभूति सम्पूर्ण विश्व में होती है। जो बारम्बार सृष्टि एवं विनष्टि को प्राप्त होता है। इन सृजन और विघटन क्रियाओं का कर्त्ता भी वही परमात्मा है। सृष्टि स्वतः न बन सकती है और न उसका विनाश ही होता है। वही पावन प्रभु निश्चय उत्पत्ति, पालन और प्रलय का कर्त्ता है।

The Omnipresent Lord shines with gloria divina in the above three hemispheres of the divine blissfulness. This whole universe resides in his first hemisphere which is always transformed in various forms.

ततो विराडजायत विराजो अधि पुरुषः ।

स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुरः ॥५॥

शब्दार्थः—(ततः) उस सनातन पूर्ण पुरुष से (विराड् अजायत) विविध प्रकार के लोक लोकान्तरों तथा प्राणियों से शोभायमान यह संसार उत्पन्न होता है (विराजः अधिपुरुषः) इस विराट् संसार से पृथक् सत्ता वाला वह परम पुरुष इसमें व्याप रहा है (अथः सः पुरः जातः) इस ब्रह्माण्ड के उत्पन्न होने से पूर्व भी वह परम ब्रह्म अपनी सत्ता से विद्यमान था (पश्चात् भूमिम्) उसके ईक्षण के पश्चात् ही यह समस्त संसार उत्पन्न होता है (सः अत्यरिच्यत) वह इस प्रकृति से पृथक् चेतन सत्ता वाला होते हुए इसमें अपनी क्रिया शक्ति का सञ्चार करने वाला है ।

भावार्थः—नाना लोक लोकान्तरों तथा असंख्य योनियों में निवास करने वाले जीवों को यहाँ विराट् नाम से पुकारा गया है। परमात्मा इस विराट् से पृथक् शाश्वत सत्तावान है । जीवों के कल्याणार्थ वह नाना लोक-लोकान्तरों की बारम्बार रचना करता है । सारे विश्व में ओत-प्रोत होते हुए भी निश्चय वह पृथक् सत्तावाला है। यह प्रकृति जिसमें वह अपने ईक्षण द्वारा गति का सञ्चार करता है और जिससे सृजन क्रिया आरम्भ होती है उसकी सामर्थ्य नाम से पुकारी जाती है। वह परम पुरुष इस ब्रह्माण्ड में अपने दिव्य तेज से चमक रहा है एवं दिव्य नेत्रों के द्वारा मानव उस तेज को निरख पाता है ।

This entire vast universe is created by Him but His own existence is quite distinct from it and He existed before this creation even.

तस्माद् यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम् ।
पशूंस्तांश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये ॥६॥

शब्दार्थः—(तस्मात् सर्वहुतः यज्ञात्) उस सर्ववन्द्य, पूज्यनीय परमात्म देव द्वारा (पृषदाज्यं सम्भृतं) गौ आदि पशुओं द्वारा घृत-दुग्ध की उत्पत्ति हुई (तान् ग्राम्यान् आरण्यान् पशून् च चक्रे) तथा नाना प्रकार के अन्य पालतू और जंगली जानवरों को उसने उत्पन्न किया (वायव्यान् चक्रे) तथा आकाश में उड़ने वाले पक्षियों को भी उत्पन्न किया ।

भावार्थः—मानव का मुख्य भोजन दूध घृतादि ही है जो गौ आदि पशुओं से उपलब्ध होता है अतः मानव कल्याणार्थ उस प्रभू ने गौ, भैंस, बकरी आदि की उत्पत्ति की। पालतू पशु हाथी, ऊँट, घोड़ा, भेड़ आदि को तथा जंगली जानवर सिंह, हरिण, चीता, भालू आदि को भी उसने ही उत्पन्न किया। आकाश में उड़ने वाले चील, बाज, पिक, काक, पारावत, तोता आदि पक्षियों की भी उसी ने सृजना की। इन सब पशु और पक्षियों की उत्पत्ति में भी जगत् का हित ही निहित है। पश् और दृशिर् धातुओं के अर्थ क्रमशः बंधन और ईक्षण होते हैं। अतः बंधन में रहने वाले गौ आदि पालतू पशु हैं और आकाश में वा वनों में दूर से देखने वाले जन्तु भी पशु हैं।

Decidedly He, the most worshipful Lord created all the milching animals. He also created all the other living beings flying in the sky, residing is forests, in water as well.

तस्माद् यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद् यजुस्तस्मादजायतः ॥७॥

शब्दार्थः—(तस्मात् सर्वहुतः यज्ञात्) उस विश्ववन्द्य पूजनीय परमात्मदेव द्वारा (ऋचः सामानि जज्ञिरे) ऋग्वेद तथा सामवेद का प्रादुर्भाव हुआ (तस्मात् छन्दांसि जज्ञिरे) उस ही पूज्य परमात्मदेव द्वारा अथर्ववेद का प्रादुर्भाव हुआ (यजुस् तस्मात् अजायत) और यजुर्वेद का भी प्रकाश हुआ।

भावार्थः—परमात्म देव ने मानव सृष्टि के आरम्भ में इन मनुष्यों के कल्याण की दृष्टि से ऋक्, यजुष् साम और अथर्व वेदों का प्रकाश मुक्ति से लौटी हुई अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा संज्ञक दिव्यात्माओं में (ज्योतियों में) क्रमशः किया। मानव का स्वाभाविक ज्ञान तो अत्यंत नगण्य है। उसके द्वारा वह अपने जीवन में किसी भी प्रकार की प्रगति नहीं कर सकता। उसके उद्धार के लिये नैमित्तिक ज्ञान का होना अनिवार्य है। उस दयालु पिता ने अपने पुत्रों के कल्याणार्थ उनकी विविध प्रकार की उन्नति के निमित्त चारों वेदों का प्रकाश किया है।

He, the most Worshipful and Revered Lord extolled by all sencient beings exshined the Rig, Yajus, Sama and Atharva Vedas in the pious souls of the primitive divinities.

तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः ।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः ॥८॥

शब्दार्थः—(तस्मात् अश्वा: अजायन्त) उस ही परम पुरुष द्वारा शीघ्रगामी घोड़े आदि जन्तु उत्पन्न किये गये (ये केच उभयादतः) तथा अन्य अनेक वह जन्तु जो नीचे ऊपर के जवड़ों वाले हैं (तस्मात् गावः ह जज्ञिरे) उसी के द्वारा कृषि आदि के निमित्त बैल आदि की सृजना की गई (तस्मात् जाता: अजावयः) उस ही ने भेड़-बकरी आदि को भी उत्पन्न किया।

भावार्थः—सवारी के काम में आने वाले शीघ्रगामी घोड़े, ऊँट आदि तथा पर्वतों में यातायात के साधन बकरी, भेड़ आदि को उस ने ही उत्पन्न किया। कृषि के निमित्त वृषभों को रचा। यह सब जन्तु जनहित में ही उत्पन्न किये गये हैं। इनका संरक्षण और संवर्धन करना मानव का धर्म है। इनमें से किसी को भी पीड़ा पहुँचाना या उनका हनन करना पाप है। वह पूर्ण पुरुष जिसने हमें उत्पन्न किया है, हमारा पिता है। इसी प्रकार इनको उत्पन्न करने के नाते वह इन सबका भी पिता है अतः इनका हननादि करना उस परम पिता के प्रति द्रोह करना है और इस प्रकार उसकी कृपा से वञ्चित होना है।

He created the swift running horses and other animals having upper and lower jaws. He created bulls, goates rams etc. as well.

तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः ।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये ॥९॥

शब्दार्थः—(तं यज्ञं पुरुषं) उस पूजनीय सर्वव्यापक परम ब्रह्म को (अग्रतः जातं) जो सृष्टि रचना के पूर्व भी विद्यमान था (साध्याः ऋषयः च ये देवाः) जितने भी यौगिक साधनाओं में संलग्न स्थितप्रज्ञ विद्वान् तथा क्रांतदर्शी तत्त्ववेत्ता सिद्ध पुरुष संसार में होते हैं (तेन यजन्ते) उसकी ही उपासना सदैव करते हैं (बर्हिषि प्रौक्षन्) अपने हृदय मंदिर की पावन यज्ञवेदी में उस ही का अभिषिचन करते हैं।

भावार्थः—वह परम पुरुष सृष्टि रचना के पूर्व भी विद्यमान था। अर्थात् जब यह संसार प्रलय अवस्था में अपने आदि उपादान कारण मूल प्रकृति में परिवर्तित हुआ-हुआ था तब भी वह शाश्वत ब्रह्म निश्चय विद्यमान था और प्रकृति पर उसका पूर्ण शासन था। संसार में जितने भी सिद्ध पुरुष और यौगिक साधनाओं में संलग्न ज्ञानीजन हुए हैं और भविष्य में होंगे सब एक

मात्र उस ही की उपासना अपने मन मंदिर में करते रहे हैं और करेंगे। उससे भिन्न अन्य किसी जड़ चेतन वस्तु की उपासना सम्भव ही नहीं है। अज्ञान का पर्दा हट जाने पर उसके दिव्य दर्शन का सौभाग्य ज्ञानी मानव को मन मंदिर में ही हो सकता है।

The All pervading and Most Adorable Lord existed even before the creation came in existance. He is the only most Worshipful at the alter of an human heart. All the noble souls practising deep meditation and through concentration of mind worship Him alone.

यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् ।
मुखं किमस्यासीत् किं बाहू किमूरू पादा उच्येते ॥१०॥

शब्दार्थः—(यत् पुरुषं व्यदधुः) जिस मानव समाज की परमात्मा ने विशेष रूप से रचना की है उसको (कतिधा व्यकल्पयत्) कितने विभागों में विभक्त किया है (मुखं किं अस्य आसीत्) इसमें प्रधानता कौन से वर्ग को प्रदान की गई है (किं बाहू) समाज की रक्षा हेतु भुजा समान कौन-सा वर्ग कल्पित किया गया है (किं ऊरू) समाज की प्रगति और उसके जीवन को सुखमय बनाने के हेतु किस वर्ग का विधान किया गया है (किं पादा उच्येते) तथा उसकी स्थिति व दृढ़ता हेतु पाद रूप किस वर्ग की रचना की गई है।

भावार्थः—मानव समाज की चतुर्मुखी उन्नति की दृष्टि से उसको चार विभागों में विभक्त किया गया है। मस्तिष्क द्वारा समाज में ज्ञान का संचार करने वाला और उसका मार्ग दर्शन कराने वाला मार्ग, भुजाओं द्वारा उसकी रक्षा करने तथा अन्याय, अनीति, अत्याचार का नाश करने वाला वर्ग, जीवनोपयोगी अन्न-वस्त्र आदि साधनों को जुटाने वाला ऊरू (उदर) समान वर्ग तथा समाज के जीवन में कला कौशल, सेवा आदि द्वारा स्थिरता लाने वाले इन वर्गों की रचना उस पावन प्रभु की कृपा का विस्तार ही है।

मानव समाज को इन चार वर्गों या वर्णों में विभक्त होने तथा निज-निज वर्ग का कार्य दक्षतापूर्वक करने का बोध और आदेश उस परमात्मा ने किया है। इन चारों वर्गों के मानव यदि दक्षतापूर्वक अपने-अपने निर्धारित कार्यों का सम्पादन करेंगे तो निश्चय समाज का उत्थान हो सकेगा। समाज में स्थिरता लाने के लिए इस विभाजन का किया जाना आवश्यक है। समाज में सुख

• शान्ति का साम्राज्य इस कार्य विभाजन द्वारा ही सम्पन्न हो सकेगा। परमात्मा ने इन चारों वर्गों को समाज में समान स्थान प्रदान किया है।

In how many forms or classes this specially created human society is divided. And what names have been alloted by All pervading Lord to its heads, arms, thighs or abdomens and legs.

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः ।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत ॥११॥

शब्दार्थः—(अस्य) इस मानव समाज का (मुखं ब्राह्मणः आसीत्) मस्तिष्क प्रधान वर्ग अर्थात् मस्तिष्क द्वारा प्रधान रूपेण कार्य करने वाले तथा ज्ञान का संचार करने वाले वर्ग को ब्राह्मण संज्ञा प्रदान की गई तथा (बाहुः राजन्यः कृतः) भुजाओं द्वारा समाज की रक्षा करने वाला वर्ग क्षत्रिय कहलाया (ऊरू तत् अस्य यद् वैश्यः) समाज की यात्रा जीवन के निमित्त आवश्यक अन्न वस्त्रादि उत्पन्न करने तथा वाणिज्य द्वारा उनको जुटाने वाला वर्ग वैश्य कहलाया और (पद्भ्यां शूद्रः अजायत) चरणों की भाँति समाज में स्थिरता लाने वाला तथा उसके उत्थान की दृष्टि से नाना प्रकार के कला कौशल में रत और समाज में शुचिता लाने वाला श्रमिक वर्ग शूद्र कहलाया।

भावार्थः—मानव समाज की दृढ़ता तथा उसकी चतुर्मुखी उन्नति की दृष्टि से इन ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र वर्णों की व्यवस्था की गई है। इन वर्गों के व्यक्तियों को अपने-अपने कार्य में दक्षता पूर्वक संलग्न रहने से समाज उन्नतिशील बनता तथा इन वर्णों द्वारा अपने विहित कर्मों के अनुष्ठान में शिथिलता बर्तने से समाज का अधः पतन होता है। ज्ञान यज्ञ के करने वालों के अभाव में समाज में अज्ञान, ईर्ष्या, द्वेष, पाखण्ड, अंधविश्वास बढ़ते, अन्याय, अत्याचार के दमन करने वाले वर्ग के अभाव में समाज में अनीति-अनाचार का बोलबाला होता, उत्पादन वर्ग के आलसी और प्रमादी बन जाने से खाद्यादि समस्याएं समाज में उत्पन्न होतीं और श्रम सम्बंधी कार्यों के प्रति उपेक्षा बर्तने तथा नीच कर्म समझने के कारण समाज पंगु, शक्तिहीन तथा पराधीन बन जाता है।

Brahmans are called the heads of the society, Kshatriyas, the ruling class, its arms, Vaishyas its thighs or abdomens and Shudras are called its legs or feet.

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।

श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥१२॥

शब्दार्थः—(मानसः चन्द्रमा जातः) ध्यान योग द्वारा मन को एकाग्र करने से मानव की वृत्ति आह्लाद और प्रसन्नता मयी हो जाती है (चक्षोः सूर्यः अजायत) और ध्यानयोग सिद्ध होने पर तथा ज्ञान चक्षु के उद्बुद्ध होने पर परम पुरुष की दिव्य ज्योतिः का दर्शन होने लगता है (श्रोतात् वायुः च प्राणः च) आप्त पुरुषों के आध्यात्मिक प्रवचनों को श्रोत्रों द्वारा ध्यान पूर्वक श्रवण करने से वायु अर्थात् जीवन में प्रगति, पापवृत्तियों के क्षीण करने की शक्ति तथा श्रेष्ठ गुणों के धारण करने में बल मिलता है और प्राणशक्ति बलवती होती है (मुखात् अग्नि अजायत) तथा मुख में अर्थात् वाक् में जीवन में क्रांति उत्पन्न करने वाली दिव्य प्रवचन शक्ति उत्पन्न होती है।

भावार्थः—चन्द्रमा, सूर्य, वायु, प्राण और अग्नि शब्दों का यहाँ यौगिक अर्थ अभीष्ट है। ध्यान योग की साधना द्वारा जीवन में हर्ष, उत्साह व शांति तथा दिव्य ज्योति की अभिव्यक्ति होने लगती है। वैदिक स्वाध्याय आत्म निरीक्षण तथा आध्यात्मिक प्रवचनों को ध्यान पूर्वक सुनने से जीवन पवित्र बनता है। इसी हेतु "स्वाध्याय प्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्" यह आप्त उपदेश है।

The human mind becomes delightful and an abode of peace by meditation or spiritual yogic exercises and visionfully enlightened by the grace of Divine Light. The energy and vitality are enhansed by attending attentively spiritual sermons and the revolutionising fiery speech out comes from the mouths of saints.

नाभ्या आसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकां अकल्पयन् ॥१३॥

शब्दार्थः—(नाभ्या आसीत् अन्तरिक्षं) नाभि तथा उससे ऊपर ऊर्ध्व जत्रु तक का भाग इस मानव के पिण्ड (शरीर) का अन्तरिक्ष है (शीर्ष्णः द्यौः समवर्त्तत) जत्रु से ऊपर का भाग जिसमें कश्यप, भारद्वाज, जमदग्नि आदि ऋषियों का वास है इसका द्यौ है (पद्भ्यां भूमिः) नाभि से नीचे का भाग जिसमें जंघा पाँव आदि हैं इस पिण्ड का पृथिवी भाग है (श्रोत्रात्

दिशः) दिशाएँ इसके श्रोत्र हैं अर्थात् इसके श्रवण व्यापार के साधन हैं तथा ज्ञान लब्धि के हेतु हैं (तथा लोकान् अकल्पयत्) इस प्रकार इस मानव देह के लोकों की कल्पना की गई।

भावार्थः—मानव समाज के चार वर्गों का वर्णन करने और यौगिक साधनाओं के द्वारा प्रथम वर्ग अर्थात् ब्राह्मण के महान् उत्कर्ष का निरूपण आदि करने के उपरान्त अब मानव की देह के विभिन्न अंगों का चित्रण इस मन्त्र में किया गया है। ऋग्वेद १०।६३।१० में जहाँ मानव देह को दैवी नौका प्रतिपादित किया है वहाँ भी इसके ऊपरी भाग को द्यौः और नीचे के भाग को पृथिवी कहा गया है।

The part of a human body from navel up to throat is called Antariksha (The air-belt) and the part above throat is called Dyaus the enlightened rigion while the portion below navel is known as its base. The directions its means of attaining knowledge as the ears. Thus the parts of an human body are designated.

यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मःशरद्धविः ॥१४॥

शब्दार्थः— (यत् यज्ञं देवाः) जिस यज्ञ को अर्थात् परोपकारादि श्रेष्ठ कर्मों को ज्ञानी मानव (पुरुषेण हविषा अतन्वत) अपने पुरुषार्थ एवं त्यागरूपी हवि से सिद्ध करते हैं अथवा जिसका वह वितान तनते हैं उस यज्ञ का (वसन्तः आज्यं आसीत्) वसंत अर्थात् हर्ष, उल्लास, उमंग, उत्साह, आज्य अर्थात् घृत है (ग्रीष्मः इध्मः) जीवन में तेज, उग्रता शौर्य इस यज्ञ की समिधाएँ हैं (शरद् हविः) तथा आंतरिक शांति और सौमनस्य इसका शाकल्य है।

भावार्थः—वसंत, ग्रीष्म और शरद् ऋतुएँ जिस प्रकार वनस्पति आदि जगत् में हर्ष, उल्लास, उग्रता, तेजस्विता और शांति सरसाने वाले हैं उसी प्रकार मानव के देह वा पिण्ड में भी यह सब इन ऋतुओं द्वारा प्रकटित होते हैं।

The sacrifice that is the performance of noble deeds is accomplished by enlightened souls through renunciation. Basant (Delight or joyfulness) is its butter. Greeshma

(Valour, courage or firmness) is its fuel and sharat (sobriety and internal peace) is its Havi that is the perfumery drugs offered to it.

सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ।
देवा यद् यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम् ।।१५।।

शब्दार्थः—(देवाः यत् यज्ञं तन्वानाः) ज्ञानी जन अपने जीवन में जिस यज्ञ का वितान तनते हैं (अस्य सप्त परिधयः आसन्) इस यज्ञ की वेदी की ७ मेखलाएं हैं और (त्रिः सप्त समिधः कृताः) २१ इसकी समिधाएं हैं और इस ज्ञान-कर्म भक्ति युक्त यज्ञ के द्वारा वह (पुरुषं पशुं अबध्नन्) सर्व दृष्टा परम ब्रह्म को अपने प्रेम पाश में बांधते हैं।

भावार्थः—मानव के पिण्ड की हृदय वेदी में जिस ज्ञानाग्नि का आधान किया जाता है उस वेदी की सात मेखलाएं हैं—दो आँखें, दो कान, दो नाक तथा एक वाक् जिनके संस्कार के द्वारा इस वेदी की रक्षा की जाती है। इन्हीं को कश्यप, भारद्वाज, जमदग्नि आदि नामों से पुकारा जाता है। इस यज्ञ की २१ समिधाएं हैं—आद्या प्रकृति, महत्तत्व, अहंकार, ५ सूक्ष्म भूत, ५ स्थूल भूत, ५ ज्ञानेन्द्रियां और तीन सत्त्व, रज, तमस् गुण। इस यज्ञ के द्वारा पशु अर्थात् सर्वद्रष्टा परम पुरुष को श्रद्धा और प्रेम की रज्जू से बांधा जाता है। ज्ञान यज्ञ के कर्त्ता को सर्व प्रथम पाशविक वृत्तियों से घिरे हुए अपने मनरूपी पशु को प्रणव के जाप रूपी खूंटे से भी बांधना आवश्यक है।

The eyes, noses, ears and tongue are its seven protecting fences. Twenty one perceptive organ elements etc. are its firewood sticks. All intelligent and learned persons do perform this sacrifice devotedly and bind the Omnipresent Lord by their ardent love strings.

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ।।१६।।

शब्दार्थः—(देवाः) ज्ञानीजन (यज्ञेन यज्ञं अयजन्त) श्रेष्ठ परोपकार आदि दिव्य कर्मों के अनुष्ठान द्वारा पूजनीय परम पुरुष का अर्चन व वन्दन करते हैं

(तानि धर्माणि प्रथमानि आसन्) मानव सृष्टि के आरम्भकाल से ही इन श्रेष्ठ कर्मों का बोध विस्तार पूर्वक उस परम पुरुष ने कराया हुआ है (महिमानः देवाः) उच्च आध्यात्मिक साधना सम्पन्न जीवन द्वारा महत्त्व को प्राप्त हुए ज्ञानी मानव (नाकं सचन्ति) उस दुःख रहित पूर्ण आनंदमयी स्थिति को प्राप्त करते हैं (यत्र पूर्वे: साध्याः सन्ति) जिस स्थिति अर्थात् मोक्ष-धाम को श्रेष्ठ सिद्ध पुरुष प्राप्त करते हैं।

भावार्थः—श्रेष्ठतम शुभ कर्मों के अनुष्ठान एवं यौगिक साधनाओं द्वारा ही मानव उस परम ब्रह्म को पा सकता है, केवल शाब्दिक वन्दन व अर्चन द्वारा नहीं। श्रेष्ठतम कर्मों का विधान उस अहेतुक दयासिंधु ने मानव सृष्टि के आरम्भ में ही अपनी कल्याणी वेदवाणी द्वारा किया हुआ है। दिव्य सुख वा आनंद को अर्थात् मोक्ष धाम को अब से पूर्व अनेक सिद्ध पुरुषों ने अपने तपः पूत जीवन में उपलब्ध किया हैं और वर्तमान में भी जो साधक इस दिशा में प्रयत्न करेंगे निश्चय ही वह दिव्य सुख को उपलब्ध करने वाले बनेंगे।

Decidedly the learned persons adore the most Worshipful Lord by their noble and benevolent deeds and these deeds have been ordained by Him in the beginning when the human beings came to exist. Thus they achieve the most delightful stage of life which the elevated noble souls have been achieving from time immemorial.

अद्भ्यः संभृतः पृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्मणः समवर्ततताग्रे ।
तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे ॥१७॥

शब्दार्थः—(अद्भ्यः पृथिव्यैः) जलों तथा पृथिवी से (विश्वकर्मणः च) और उस सूर्य वा अग्नि से जिसके सहारे सर्व कर्म सिद्ध होते हैं (रसात् च) महान् तेज से (संभृतः) सम्यक् प्रकार से पुष्ट हुआ यह सारा संसार (अग्रे समवर्त्तत) पहले वर्त्तमान में आया (तस्य तद् रूपं) उस इस जगत् के स्वरूप को (त्वष्टा विदधत्) संसार को पूर्ण विज्ञानमयी प्रक्रिया से रचने वाले महान् रचयिता ने निर्मित किया है (मर्तस्य) मरणधर्मा मानव को वह परम पुरुष (आजानं देवत्वं एति) सम्यक् प्रकार से देवत्व प्राप्त कराता अर्थात् देवत्व प्राप्ति के दिव्य मार्ग का बोध अपनी कल्याणी वाणी द्वारा कराता है।

भावार्थः—पृथिवी, जल, अग्नि वा सूर्य के तेज द्वारा ही समस्त वनस्पतियों,

ओषधियाँ, अन्नादि तथा नाना पशु-पक्षी, मानव योनियों का निर्माण होता है। इन्हीं तत्त्वों के द्वारा यह संसार नाना रूप व रंगों को धारण करने में समर्थ होता है। परमात्मा इस जगत् को पूर्ण विज्ञानमयी प्रक्रियाओं से रचता है और मानव सृष्टि के आरम्भ में स्वाभाविक अत्यल्प ज्ञानवान् मानवों को अपने नैमित्तिक ज्ञान वेद से युक्त करता है। तथा अपने तक पहुँचने का दिव्य मार्ग प्रदर्शित करता है। श्रेष्ठतम दिव्य कर्मों का बोध कराकर मानव के लिये दिव्य जीवन निर्माण और दिव्य आनंद प्राप्ति का ज्ञान कराता है।

This world is created by Lord Divina from the healthy elements of earth, water and fire or sun by sound scientific process in the beginning. Afterwards various forms are given to the creation. The divine path of attaining divinity or salvation by the mortal beings is proclaimed through the knowledge divina that is Veda.

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्।
तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय ॥१८॥

शब्दार्थः—(अहं एतं महान्तमपुरुषं वेद) मैं इस सर्वव्यापक महतोमहीयान् परम पावन पुरुष को जानने वाला बन जाऊँ (आदित्य वर्णं) जो दिव्य प्रकाश स्वरूप है (तमसः परस्तात्) और अज्ञान अंधकार से सर्वथा दूर रहने वाला है (तं एव विदित्वा) उसको ही जानकर मानव (अति मृत्युं एति) मृत्यु के बंधन से अर्थात् आवागमन के चक्र से छुटकारा पा जाता है (अयनाय) मुक्ति या आनंद धाम को पाने का (अन्यः पन्था न विद्यते) अन्य कोई दूसरा मार्ग नहीं है।

भावार्थः—संसार में ईश वन्दना, अर्चना व स्तुति आदि के प्रकार अनेक हो सकते हैं और हैं। मानव अपनी अपनी भाषा में और अपने अपने ढंग से उन्हें करता है किन्तु उस परमात्म देव की उपासना, जिसका उद्देश्य आवागमन के चक्र से छुटकारा पाकर मोक्ष को पाना है, का मार्ग एक और केवल एक ही है और वह है मन-बुद्धि की शुद्धि, चित्त की एकाग्रता, निज चेतन शुद्ध बुद्ध स्वरूप का बोध और अन्त में अन्तर्तम परम सखा का सम्यक् दर्शन और उसमें आत्म समर्पण कर तन्मयता उपलब्ध करना।

I aspire to realise the Omnipresent, Omnipotent and Most Delightful Lord who is explicitly far away from

ignorance. Only by realising Him, a man can set himself free from the clutches of death. There exists no other way than this for the attainment of immortality.

प्रजापतिश्चरति गर्भे अन्तरजायमानो बहुधा वि जायते।
तस्य योनिं परि पश्यन्ति धीरास्तस्मिन् ह तस्थुर्भुवनानि विश्वा ॥१९॥

शब्दार्थः—(अजायमानः प्रजापतिः) कभी उत्पन्न न होने वाला अर्थात् जन्मादि के बंधनों में कभी न आने वाला सदा एक रस विद्यमान परमात्मा सकल प्रजाओं का स्वामी है (अन्तः गर्भे चरति) वह जीवात्मा के हृदय रूपी गर्भ में अर्थात् गहन गुफा में विशेष रूप से रमण करने वाला है (बहुधा विजायते) नाना प्रकार के यज्ञीय कर्मों के अनुष्ठान से मानव को उसकी महिमा का भान होता है किन्तु (धीराः) स्थितप्रज्ञ विवेकीजन ही (तस्य योनिम्) उसके तात्त्विक दिव्य स्वरूप को (परि पश्यति) सम्यक् प्रकार से जानने में समर्थ होते हैं (तस्मिन् ह तस्थुः भुवनानि विश्वाः) निश्चय उस ही परम पुरुष में सारे लोक लोकान्तर तथा मानवादि योनियाँ समाई हुई हैं।

भावार्थः—उत्पद्यमान सकल लोक लोकान्तरों तथा असंख्य जंगम और स्थावर योनियों का वह स्वामी है, अधिष्ठाता है किन्तु स्वयं स्वरूप से वह अजन्मा है। वह सारे ब्रह्माण्ड में ओतप्रोत है और उसके बाहर भी अनंत आकाश में रमा हुआ है किन्तु मानव की हृदयरूपी गुफा में वह विशेष रूप से निवास करने वाला है। नाना प्रकार के दिव्य परोपकार कर्मों के करने वाले मानवों को उसकी प्रतीति होती है। हिमाच्छादित पर्वतों के शिखरों पर, सागर के ज्वार-भाटों में, नदियों के कल-कल निनाद में, आकाश गंगा के झिल मिल प्रकाश में मानव को उसकी महत्ता का ज्ञान होता है किन्तु स्थितप्रज्ञ, प्रशान्तचित्त ध्यानयोगी ही उसके दिव्य स्वरूप को उसकी आनंदमयी दिव्यज्योति को अपने अन्दर लख पाते हैं। यह सारा विश्व और विश्व के प्राणी उस एक अद्वितीय परम पुरुष में ही समाये हुए हैं।

The unborn Lord divine, who rules over the whole universe, is the protector of the mankind. He resides wonderfully in the cavity of Human Heart. A man realises His grandeur in many way, by performing noble deeds but this divine blssfullness is only perceived by deep meditation alone. He creats the world in various forms and all the stars, planets and satellites reside in Him.

यो देवेभ्य आतपति यो देवानां पुरोहितः ।
पूर्वो यो देवेभ्यो जातो नमो रुचाय ब्राह्मये ॥२०॥

शब्दार्थः—(यः देवेभ्यः आतपति) निश्चय वह परम पुरुष ज्ञानी जनों की आत्माओं में अपनी विशेष ज्योति जगमगाता है (यः देवानां पुरोहितः) जो ज्ञानीजनों का विशेष मार्ग दर्शक है और उनको दिव्य कर्मों के अनुष्ठान की सतत प्रेरणा देता है (यः देवेभ्यः पूर्वः जातः) जो ज्ञानी जनों के मानव तनों में आने से पूर्व भी विद्यमान रहने वाला है (नमः रुचाय ब्राह्मये) ऐसे उस परम कमनीय, दिव्य ज्योति स्वरूप महान्, ऐश्वर्यशाली पावन प्रभु को हमारा बारम्बार नमस्कार है।

भावार्थः—परमात्मा का ईक्षण ही उसका तप है। जीवों के कल्याण के हेतु वह नाना लोक लोकान्तरों को रचता, पृथिवीतल पर सागर पर्वतों, सरोवरों को रचता और ओषधि, वनस्पतियों को रचता पशु-पक्षियों की सृजना करता और मानव योनियों की रचना करता है। इस रचना के पूर्व भी वह अपनी शाश्वत सत्ता से अखण्ड एक रस विद्यमान रहता है। वह मानवों के हृदयों में श्रेष्ठ कर्मों के अनुष्ठान की प्रेरणा देता और ज्ञानीजनों को विशेष मार्ग दर्शन कराता है। वह प्रभु हमारा प्राण प्यारा सखा है, उसका दर्शन अत्यंत कमनीय और प्रीतिकर है। मानवों को उस दिव्य चेतना शक्ति का साक्षात् करने का सदा प्रयत्न करना चाहिए। यही मानव-जीवन की चरम साधना है।

Decidedly He enshines His divine blissful light amongst the noble souls and He leads them to the righteous path. He existed even before these enlightened souls achieved human forms. We feelingly adore the Most Revered Lord Brahma.

रुचं ब्राह्मं जनयन्तो देवा अग्रे तदब्रुवन् ।
यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यात्तस्य देवा असन् वशे ॥२१॥

शब्दार्थ—(ब्राह्मं रुचं) उस महान् दिव्य तेज का—ब्रह्म की उस महती दिव्य ज्योति का (देवाः जनयन्तः) ज्ञानी मानव यौगिक साधनाओं द्वारा अपने अन्दर दर्शन करते हैं (तत् अग्रे अब्रुवन्) इस विश्व चेतना के दिव्य तेज का ज्ञानी जन पूर्व काल से बखान करते आये हैं (यः ब्राह्मणः) जो ज्ञानी ब्रह्मनिष्ठ विद्वान् (एवं विद्यात्) इस प्रकार से अर्थात् यौगिक साधनाओं

द्वारा उस [illegible] पुरुष को ज्ञान लेना है (तस्य देवा असन् वशे) उसके वश में सब दैवी शक्तियां व विभूतियाँ हो जाती हैं ।

भावार्थः—इस ब्रह्माण्ड में ज्ञानीजन सदा से उन अत्यन्त प्रीतिकर महती दिव्य चेतना वा शक्ति का दर्शन करते आये हैं । जिन तपः पूत ज्ञानी जनों ने उस महान् चेतन तत्त्व की अपनी आत्मा में सम्यक् अनुभूति ली है, निश्चयै ही संसार की दैवी शक्तियाँ और विभूतियां उनका अनुवर्त्तन करने लगती हैं ।

The noble souls well accomplished in deep meditation do percieve within themselves the most blissful world energy and proclaim it loudly to the world. Personages well versed in divine knowledge positively perceive Him. All the divine powers do attend them.

श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण ॥२२॥

शब्दार्थ:—(श्रीः च लक्ष्मीः च ते) परमात्मदेव आदेश देते हैं कि ऐ इन्द्रियजयी मानव । यह श्री अर्थात् शारिरिक सौन्दर्य व स्वास्थ्य तथा धन सम्पत्ति, ऐश्वर्य तेरी दो पत्नियाँ हैं अर्थात् तूने इनका सदैव संरक्षण करना है (अहोरात्रे पार्श्वे) दिन और रात तेरे दो पार्श्वे अर्थात् पंख हैं (नक्षत्राणि रूपम्) नाना तेजोमय नक्षत्र तेरे रूप हैं (अश्विनौ व्यात्तम्) सूर्य और चन्द्रमा तेरे यश की सीमाएँ हैं (अमुं इष्णं इषाण) तू इस संसार के ऐश्वर्य को उपलब्ध कर किन्तु यह ध्यान रख कि (म इषाण सर्व-लोकम्) मेरा यह ऐश्वर्य प्राप्ति का सारा प्रयत्न सारे समाज वा राष्ट्र के लिये है (म इषाण) निश्चय मेरा ऐश्वर्य जन-कल्याण के लिये है ।

भावार्थः—सुन्दर स्वास्थ्य तथा धन वैभव का मानव को सदा प्रयत्नपूर्वक उपार्जन व संरक्षण करना चाहिए । इनका अपव्यय और नाश करना पाप है । दिन और रात्रि मानव के पंखों के समान हैं अर्थात् दिन और रात्रि क्रमशः श्रम और विश्राम करने के लिए हैं । लोकोपकार और आत्मचिंतन करने के लिये हैं । इन पंखों के द्वारा मानव को अपने जीवन में ऊँची उड़ान उड़नी चाहिए अर्थात् उच्च आदर्श को सामने रखकर काम करना चाहिए । इन

पंखों द्वारा अपनी जीवन नौका को सफलतापूर्वक संसार सागर में खेना चाहिए। सूर्यादि नाना तेजोमय लोक मानव के रूप तुल्य हों अर्थात् वह जन समाज में सूर्य आदि की भांति चमकने वाला हो। सूर्य एवं चन्द्रमा मानव के यश की परिधियां हों अर्थात् यावत् चन्द्र दिवाकर उसका यश स्थिर रहना चाहिए। मानव विश्व में ऐश्वर्य तो उपार्जन करे किन्तु यह समझकर कि मेरी यह सकल सम्पदा जनता के कल्याण के लिए है। मेरा ज्ञान, अनुभव, वैभव और जीवन समाज के लिए हो, परोपकार के लिए हो, मेरे इस जीवन की एकमात्र साधना विश्व का कल्याण करना है।

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं नापुनर्भवम्।
कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम्॥

मुझे जीवन में राज्य की कामना नहीं, स्वर्ग प्राप्ति की भी अभिलाषा नहीं और न अपनी व्यक्तिगत मुक्ति की प्राप्ति की ही मुझे कामना है। बस मेरी तो यही एकमात्र कामना है कि मैं अपने जीवन में जगत् के प्राणियों का कष्ट हरण कर सकूं।

Ohuman being ! health and wealth are to be well preserved by you. Days and nights are thy wings by which you can fly to the heights of your life. You should shine in public like stars in the sky. Sun and moon may be the limits of your glory. You may acquire wealth and prosperity but you should always keep this in mind that these are for the benefit of others, positively for the benefit of others.

ब्रह्मोपनिषद्

यजुर्वेद अध्याय ३२ को हमने यहां ब्रह्मोपनिषद् के नाम से विख्यात किया है। इस अध्याय में केवल १६ मन्त्र हैं किन्तु प्रतीकों के ८ मन्त्रों को मिलाकर संख्या २४ हो जाती है। इन २४ मंत्रों में परमात्म देव की महिमा का ही विशेष रूप से विशद वर्णन किया गया है।

अध्याय ३२ के १-१२ मन्त्रों का ऋषि स्वयम्भु ब्रह्म नामक व्यक्ति विशेष हुआ है जिसने इन मन्त्रों पर किसी युग में विशेष प्रकाश डाला है। इसी प्रकार मन्त्र १३-१५ का ऋषि मेधा कामः है और अंतिम मन्त्र का श्री कामः है। प्रतीकों द्वारा अभीप्सित यजु० अ० २५ के १०-१३ मन्त्रों का ऋषि प्रजापति है। यजुर्वेद अध्याय १२ के मन्त्र १०२ का ऋषि हिरण्यगर्भ है और अध्याय ८ के मन्त्र ३६ का ऋषि विवस्वान् है।

इस अध्याय के १-८ तथा १०-१२ व १४ संख्यक मन्त्रों का देवता परमेश्वर, परमात्मा व आत्मा है। मंत्र ९ का देवता संहिता में विद्वान् अङ्कित है। मंत्र १३ का देवता इन्द्र, मंत्र १५ का देवता विद्वांसो तथा मंत्र १६ का देवता विद्वद्राजानौ दिया हुआ है।

प्रतीकों द्वारा अभीप्सित यजुर्वेद अ० २५ के मंत्र १०-१३ का देवता हिरण्य-गर्भ, परमात्मा व ईश्वर है। अध्याय १२ के मंत्र १०२ का देवता 'कः' है। अध्याय ८ के मन्त्र ३६ का देवता परमेश्वर है।

तीसरे मन्त्र के अंत में यजु० अ० २५ के मन्त्र का प्रतीक "हिरण्यगर्भ इत्येषः०" पठित है किन्तु महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने वेद भाष्य में इस प्रतीक से मन्त्र १०-१३ का ग्रहण किया है। मन्त्र ११-१३ में हिरण्यगर्भ की स्पष्ट अनुवृत्ति होने से ऋषि का ऐसा करना सर्वथा युक्ति संगत है। इसी तीसरे

मंत्र के अंत में अध्याय १२ का प्रतीक "मा मा हिंसीदित्येषः ०" और अध्याय ८ के मंत्र ३६ का प्रतीक "यस्मान्नजात इत्येषः ०" भी पठित है। इन मंत्रों का पाठ कर्मकाण्ड के विशेष यज्ञों में करने की आर्य परम्परा रही है। इन प्रतीकों को उन-उन मंत्रों का जिनके अन्त में वे पठित हैं, भाग मानकर वर्त्तमानकालीन यजुर्वेदपारायण यज्ञों में आहुति देना अज्ञता सूचक है और आर्य परम्परा की स्पष्ट अवहेलना है।

इस ३२ वें अध्याय में परमात्म देव की अद्‌भुत महिमा, उसकी शक्तियों, गुणों व कर्मों का वर्णन और उसकी सर्वव्यापकता का सुन्दर चित्रण है। परमात्मा को प्राप्त करने का मार्ग प्रदर्शित किया गया है। जीवात्मा का वह शाश्वत सखा है। उस सखा का दर्शन करने के लिए जिस अनिवार्य मेधा बुद्धि की आवश्यकता है उसको उस सखा से ही मांगने का निर्देश दिया गया है।

अंत में आध्यात्मिक ज्ञान व यौगिक साधना द्वारा दिव्य कांति को उपलब्ध करने का मानव को उपदेश दिया गया है।

प्रतीकान्तर्गत मंत्रों में भी उस प्रभु की महिमा तथा उसकी तीन ज्योतियों एवं १६ कलाओं का महत्त्वपूर्ण वर्णन किया गया है।

—शिवदयालु

ब्रह्मोपनिषद्

तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद्वायुस्तदु चन्द्रमाः ।
तदेव शुक्रं तद् ब्रह्म ता आपः स प्रजापतिः ॥१॥

शब्दार्थः—(तत्) वह सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सनातन, अनादि, सच्चिदानंद स्वरूप, नित्य शुद्ध, बुद्ध, मुक्तस्वभाव, न्यायकारी, दयालु, जगत् का स्रष्टा, धारण-कर्त्ता और सबका अन्तर्यामी है (एव) निश्चय ही वह (अग्निः) अज्ञात विश्वचेतना (आदित्यः) दिव्य प्रकाश का केन्द्र है (तद् वायुः) वह गति का केन्द्र तथा उसका अन्तिम विधान है। दुष्टों, दुर्गुणों, दुर्वासनाओं का क्षय करने वाला है (तद् उ चन्द्रमाः) आह्लाद, आनंदकारक व आध्यात्मिक मद का शाश्वत झरना है (तद् एव शुक्रं) वह अत्यन्त पवित्र और बलवीर्य, विक्रम का आगार है। (तद् ब्रह्म) निश्चय रूप से वह दिव्य ज्ञान का अतुलित भण्डार है (ताः आपः) वह परमात्मा सर्वव्यापक और दिव्य शांति का स्रोत है (सः प्रजापतिः) निश्चय वही सर्व प्रजाओं का रक्षण और पालन करने हारा है।

भावार्थः—परमात्मा एक और अद्वितीय है। अनंत ज्ञान-बल-क्रियाओं का केन्द्र है। अग्नि, वायु, आदित्य, चन्द्रमा, शुक्र, ब्रह्म, आपः, प्रजापति आदि असंख्य नामों से वह पुकारा जाता है। सब नाम उसके विभिन्न कर्मों एवं गुणों के बोधक हैं। नाना देवता वाद की कल्पना थोथी और निर्मूल है। अग्नि, वायु, आदित्य आदि शब्द ईश्वर से भिन्न अर्थों वाले भी हैं किन्तु प्रसंग से ही ये अर्थ किये जा सकते हैं। इन शब्दों के अर्थों की संगति परमात्मा में ही प्रधानरूपेण लगती है।

He is the Omnicient, the Annihilator of ignorance, evils, the world energy, the most delightful, the Omnipotent, the Supreme most, the Omnipresent and the protector of this universe.

सर्वे निमेषा जज्ञिरे विद्युतः पुरुषादधि ।

नैनमूर्ध्वं न तिर्यञ्च न मध्ये परिजग्रभत् ॥२॥

शब्दार्थः—(विद्युतः पुरुषात्) विशेष प्रकाशमान ब्रह्माण्डरूपी पुरी में रमण करने वाले परमात्म देव द्वारा (सर्वेनिमेषाः) क्षण से लेकर कल्प पर्यन्त सब काल अवयवों का सूर्यादि की रचना के कारण प्रादुर्भाव पूर्णरूप से होता है (एनं) मानव इस परम पुरुष को (ऊर्ध्वं न परिजग्रभत्) ऊपर आकाश में इन नेत्रों द्वारा ग्रहण नहीं कर सकता (न तिर्यञ्च) न नाना पूर्वादि दिशाओं में पकड़ सकता है (न मध्ये परिजग्रभत्) और न इस संसार के मध्य ही ग्रहण कर सकता है ।

भावार्थः—परम पुरुष परमात्मा सूर्यादि द्युलोक में तथा पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, ऊपर नीचे दिशाओं में और इस संसार के मध्य अपनी सनातन सत्ता से सदा वर्त्तमान रहता है। मानव की हृदय रूपी गुफा में उसका विशेष वास है। ज्ञान चक्षु द्वारा वहाँ ही मानव उसको ग्रहण कर सकता है। वही प्रभु इस सृष्टि का सृजनहार है। पल, घड़ी, दिन, पक्ष, मास, संवत्सर, युग, मन्वन्तर ब्राह्मदिन, कल्पादि कालावयवों का आविर्भाव भी उसके रचे सूर्यादि से होता है।

The most Lustreful Omnipresent Lord denoted the fractions of time from Pal (second) to Kalpa by creating Sun and Moon. He cannot be perceived in twinkling stars, in east, west etc. directions and this world, we live in.

न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महद् यशः ॥३॥

शब्दार्थः—(यस्य) जिसका (महद् यशः) महान् यश (नाम) विश्व में प्रसिद्ध है अर्थात् जो निश्चय ही महान् यशस्वी एवं कीर्तिमय है (तस्य) उसकी (प्रतिमा) कोई मूर्ति, प्रतिविम्व वा नाप नहीं है।

भावार्थः—निश्चय ही वह अज्ञात विश्वचेतना एक अजस्र ज्योति है जो सारे ब्रह्माण्ड में प्रसिद्ध है। उसका यश निश्चय ही महान् और असीम है। उसकी किसी प्रकार की कोई मूर्ति नहीं हो सकती। वह तो असीम है, कोई चित्र, परछाईं आदि भी नहीं हो सकती, उसकी किसी प्रकार से नाप वा तुलना नहीं की जा सकती।

His glory is supreme and omnipresent. He is decidedly imageless and beyond measurement.

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।

स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।४।।

शब्दार्थः—(अग्रे) सृष्टि रचना से पूर्व (हिरण्यगर्भः) सब ज्योतिर्मय सत्त्व आदि परमाणुओं को अपनी सामर्थ्य में धारण करने वाला परमात्मा (समवर्तत) सम्यक् प्रकार से वर्तमान था (भूतस्य) फिर इस उत्पन्न हुए सकल ससार का (जातः) वह प्रसिद्ध (एकः पतिः) एक अद्वितीय पालन कर्त्ता (आसीत्) हुआ वा होता है (स दाधार) निश्चय वही धारण करता है (द्यां) द्युलोक को अर्थात् प्रकाशमान सूर्य, अश्विनी, भरणी, ध्रुव, आदि लोकों को (पृथिवीं) प्रकाश शून्य पार्थिव लोकों को (उत इमां) और इस भूमि को जिसमें हम निवास करते हैं (कस्मै देवाय) हम किस दिव्य शक्ति को (हविषा विधेम) अपनी श्रद्धा की आहुति द्वारा अर्चन करें (कस्मै देवाय) निश्चय उस आनंद स्वरूप दिव्य देव के प्रति (हविषा विधेम) हम अपनी श्रद्धा भक्ति की आहुति भेंट करें।

भावार्थः—प्रलय अवस्था में यह सकल ब्रह्माण्ड सत्त्व-रज-तमात्मक परमाणुओं के रूप में अर्थात् आद्या प्रकृति के रूप में परमात्मदेव की महती सामर्थ्य में विद्यमान रहता है। इसी कारण उस परम पुरुष को हिरण्यगर्भ नाम से पुकारा जाता है। सृष्टि रचना के उपरान्त सकल लोक-लोकान्तरों, सब मनुष्य पशु-पक्षी आदि योनियों तथा वनस्पति आदि का रक्षण व पालन वही परमात्मा करता है। निश्चय वही परमपुरुष समस्त प्रकाशमान व प्रकाशशून्य लोकों को धारण करने वाला है। उससे भिन्न हम किसका अर्चन, वंदन, स्तवन वा उपासना करें। निश्चय वह परमानंद स्वरूप परमब्रह्म ही हम सबका एकमात्र अर्चनीय, वन्दनीय, स्तुत्य एवं उपास्य देव है।

Before this world cometh to existence it remaineth in the form of electrons within the womb of the prowess of the Supreme Being and when the universe cometh to exist it is controlled and protected by Him. Decidedly He upholds all the stars, planets and satellites and the earth we live upon. Except this to whom else we should pay our benidictions.

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव ।
य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।५।।

शब्दार्थ—(यः एकः) जो एक अद्वितीय परमात्मा (प्राणतः जगतः) प्राणी जगत् का अर्थात् प्राण शक्ति को धारण करने वाले मानव, पशु-पक्षी

आदि का तथा (निमिषतः जगतः) वृद्धि आदि की दशा में चेष्टा करने वाले अर्थात् अंकुर से वृक्षादि के रूप में संवर्धित होने वाले स्थावर जगत् का (महित्वा) अपनी महिमामयी शक्ति के कारण (इत्) निश्चय करके (राजा बभूव) प्रकाशक अर्थात् निर्माता होता है (यः) और जो (अस्य द्विपदः) इन दो पाँव वाली मनुष्यादि योनियों का तथा (अस्य चतुष्पदः) इस चार पांव वाली पशु आदि योनियों का एक मात्र शासक है (कस्मै देवाय) उससे भिन्न किस महती शक्ति को (हविषा विधेम) हम अपनी श्रद्धा रूपी हवि अर्पित करें (कस्मै देवाय हविषा विधेम) निश्चय हम उस आनंदस्वरूप परमपुरु को ही अपनी श्रद्धा की अञ्जलि समर्पित करें।

भावार्थः—वह परमात्मा अपनी अनन्त शक्ति सामर्थ्य के द्वारा संसार के सर्व प्राणियों पर शासन करता है। उसी का शासन सब स्थावर वृक्ष आदि योनियों पर भी रहता है। निश्चय वह महान् देव ही सब दोपायों और चौपायों पर राज्य करता है। उससे भिन्न कोई उपास्य देव नहीं है। निश्चय वह परमानंद स्वरूप परम पुरुष ही हमारा एकमात्र उपास्य देव है। उसको ही हम अपनी श्रद्धा की भेंट चढ़ावेंगे।

Decidedly He controlleth the entire animal and non-animal world. He alone is the Lord of all. His reign extends over all biped and quadruped animal beings. There is none except Him to whom we may pay our salutations.

यस्येमे हिमवन्तो महित्वा यस्य समुद्र रसया सहाहुः।
यस्येमाः प्रदिशो यस्य बाहू कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥६॥

शब्दार्थः—(यस्य महित्वा) जिस परम पुरुष की महती शक्ति द्वारा (इमे हिमवन्तः) बर्फ से ढके हुए ऊँचे-ऊँचे पर्वत (समुद्रं) बड़े-बड़े गम्भीर सागर (रसया सह) असंख्य नदियों और स्रोतों सहित (यस्य आहुः) जिससे उत्पन्न हुए कहे जाते हैं (यस्य इमे) जिसकी (प्रदिशः) दिशाएं और प्रदिशाएँ (बाहू) भुजाओं के समान हैं (कस्मै देवाय) हम उस परम पावन आनंद स्वरूप देव को (हविषा विधेम) अपनी श्रद्धा की भेंट चढ़ाते हैं।

भावार्थः—वह परम पुरुष महान् शक्तिशाली है। उसकी शक्ति का पारावार नहीं। उसने संसार के ऊंचे-ऊंचे पर्वतों को जिनके शिखर सदैव बर्फ से

आच्छादित रहते हैं, [illegible] किया हुआ है। जिसने पृथिवी तल पर बड़े-बड़े गहरे विस्तार वाले सागरों को उत्पन्न किया है और असंख्य नदियों व स्रोतों का निर्माण किया है। सब पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, ऊर्ध्व, अधः दिशाएँ तथा प्रदिशाएँ जिसकी भुजाओं के समान हैं। हम उससे भिन्न किसको अपनी श्रद्धा का केन्द्र बनावें। निश्चय वही एकमात्र हमारा उपास्य देव एवं हमारे जीवन का सम्बल है।

All these snow-peak, high mountains and vast and deep oceans with innumerable rivers and springs speak mutely His glory and they exist only owing to his immerse energy and power. These directions are extended like His arms. To whom else we can pay our homage except the most blissful Lord.

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्य छायामृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥७॥

शब्दार्थः—(यः) जो (आत्मदा) आत्मिक शक्तियों का देने वाला है (यः बलदा) तथा जो शारीरिक व सामाजिक बलों का देने वाला है (यस्य विश्वे देवाः उपासते) जिसकी संसार के सब ज्ञानीजन उपासना करते हैं (प्रशिषं यस्य देवाः) जिसके शासन को सब विवेकशील मानव हृदय से स्वीकार करते हैं (यस्यछाया अमृतं) जिसका आश्रय अमरता प्रदान करने वाला है (यस्य मृत्युः) और जिसका आश्रय शांतिपूर्ण सुखद मृत्यु को प्रदान करने वाला है (कस्मै देवाय हविषा विधेम) हम केवल उस आनंद स्वरूप परम पुरुष को ही अपनी श्रद्धा की भेंट चढ़ावेंगे।

He bestoweth this spiritual as well as physical prowess to us all. All the sentient noble being ardently meditate upon Him and obey His commands feelingly. His shelter giveth us immortality and death full of peace and tranquillity. We feelingly adore Him, the divine blissful Lord.

मा मा हिंसीज्जनिता यः पृथिव्या यो वा दिवं सत्यधर्मा व्यानट् ।
यश्चापश्चन्द्राः प्रथमो जजान कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।८।।

शब्दार्थः—(यः सत्यधर्मा) जो शाश्वत सत्यज्ञान का प्रकाशक और ज्ञानमयी सृष्टि रचना आदि क्रियाओं का करने वाला है (यः दिवं व्यानट्) जो द्युलोक अर्थात् असंख्य प्रकाशपूर्ण लोक लोकान्तरों को रचकर उनको निर्धारित धुरियों पर गति कराता है (यः वा पृथिव्याः जनिता) और जिसने असंख्य पार्थिव लोकों को रचकर निर्धारित धुरियों और मार्ग चक्रों परग तिमान किया है (यः च प्रथमः) और जिस सृष्टि रचना से पूर्व भी विद्यमान सर्वव्यापक परमात्मा ने (आपः चन्द्राः च जजान) असंख्य जलस्रोतों, सागरों, नदियों को तथा अनेक उपग्रह चन्द्रमाओं को रचा है (मा मा हिंसीत्) वह परमात्मदेव मुझ को मृत्यु से सदा उबारे और जीवन में अमरता प्रदान करे (कस्मै देवाय हविपा विधेम) कहो उससे भिन्न कौन-सी वह दैवी शक्ति है, जिसकी हम उपासना करें ।

भावार्थः—परमात्मा शाश्वत ज्ञान का देने वाला, ज्ञान-बल-क्रियाओं का महान् केन्द्र है। सृष्टि रचना के पूर्व भी वह विद्यमान था। वह ज्ञानमयी रचना का करने वाला है। उसने असंख्य प्रकाशपूर्ण नक्षत्रों को रचकर उनको अपनी-अपनी धुरी पर अनुशासन में रहते हुए गति करने की क्षमता प्रदान की है। उसी ने असंख्य प्रकाशशून्य पृथिवी, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि आदि ग्रहों की रचना की और उनको अपनी-अपनी धुरी एवं मार्ग चक्र पर गति करने की क्षमता प्रदान की। उसी ने ग्रहों के चहुँ ओर गति करने वाले चन्द्रों को भी रचा है तथा पृथिवी तल पर नाना सागरों, नदियों व स्रोतों को उत्पन्न किया है। उसी की उपासना द्वारा मानव पतन के गर्त के ऊपर उठ सकता है। मानव को सदा यही प्रार्थना करनी चाहिए कि वह मुझे असत् से हटाकर सत्य की ओर ले चले । वही आनंदस्वरूप परमात्मा इस मानव का एकमात्र अर्चनीय देव है। उससे भिन्न की अर्चना केवल आत्म-वंचना है।

He the embodiment of truth and bestower of divine knowledge had created innumerable stars, planets and satellites. He has created vast oceans, rivers and springs. We devotedly pay our felicitations to Him, the Supreme Blissful Lord.

यस्मान्न जातः परो अन्यो अस्ति य आविवेश भुवनानि विश्वा ।
प्रजापतिः प्रजया संरराणस्त्रीणि ज्योतींषि सचते स षोडशी ॥६॥

शब्दार्थः—(यस्मात् परः) जिससे भिन्न (अन्यः) अन्य कोई दूसरा (न जातः अस्ति) इस ब्रह्माण्ड में पैदा नहीं हुआ है अर्थात् अन्य कोई विद्यमान नहीं हैं (यः विश्वा भुवनानि आविवेश) जो इन समस्त लोक लोकान्तरों में निज सत्ता से रम रहा है (प्रजापतिः) वह सब प्रजाओं का पालन कर्त्ता (प्रजया संरराणः) अपनी प्रजा के साथ ज्ञान व गति का व्यवहार करता हुआ अर्थात् प्रजाओं को ज्ञान व जीवन दान करता हुआ (त्रीणि ज्योतींषि सचते) तीन तैजस, विज्ञान एवं आनंद रूपा ज्योतियों से उनको युक्त करता है अर्थात् मनोमय, आनंदमय और विज्ञानमय कोषों को साधना द्वारा शुद्ध करते हुए ध्यानयोग में संलग्न मानव को क्रमशः इन तीन ज्योतियों का दर्शन कराता है। अथवा उस जगदीश्वर ने अग्नि, वायु और आदित्य इन ज्योतियों को प्रकट करके उनके द्वारा संसार में ज्ञान का विस्तार किया है (षोडशी च सचते) और उसी ने १६ कलाओं की रचना भी की है।

भावार्थः—वह परमात्मा निश्चय ही एक महान् अद्वितीय चेतन तत्त्व है जिससे महान् वा जिसके तुल्य अन्य कोई तत्त्व संसार में नहीं है। निश्चय वह असंख्य लोक लोकान्तरों को रचकर उनमें व्याप रहा है। निश्चय वही समस्त प्रजाओं का स्वामी और पालन कर्त्ता है। वही सकल मानवादि प्रजाओं को जीवन व अन्तश्चेतना देने वाला है। ध्यानयोगी मानव पंच-कोषों की शुद्धि करता हुआ उसके तैजस, विज्ञान व आनंद पादों की अनुभूति अपनी अन्तरात्मा में करता है अथवा वह अग्नि, वायु और आदित्य नामक तीन ज्योतियों को प्रकट करता है अथवा ऋक्, यजुष् व साम ज्योतियाँ प्रकट करता है जिनके द्वारा संसार में ज्ञानादि का प्रकाश होता है। उसी परम पुरुष ने १६ कलाओं अर्थात् प्राण, श्रद्धा, आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथिवी, इन्द्रिय, मन (बुद्धि), अन्न, वीर्य, तप, मंत्र, कर्म, लोक और नाम की सृजना की है।

None else there exists except Him who can pervade all the regions of the universe. He the protector of all the animal beings, bestoweth them with energy and conscience. By practicing constant meditation a man can percieve within himself the three lights that is divine brightness, divine in-tuition and divine bliss or the Lord has created the three divinities Agni, Vayu and Aditya through which the know-ledge divine is revealed or He has revealed the three lights

Rig, Yajus and Sama. He has created all the 16 kalas known as Prana (Breath) Shraddha (devotion), Ether, air, fire, water, earth, perceptive organs as well as organs of action, mind nourishments, semens, valour, knowledge, energy and forms.

एषो ह देवः प्रदिशोऽनु सर्वाः पूर्वोजातः स उ गर्भे अन्तः ।
स एव जातः स जनिष्यमाणः प्रत्यङ् जनास्तिष्ठति सर्वतोमुखः ॥१०॥

शब्दार्थः—(जनाः) हे विद्वज्जनो (एषः ह देवः) निश्चय यह महान् दिव्य ज्योतिः स्वरूप परम पुरुष (सर्वाः प्रदिशः अनु) सब दिशाओं में अनुकूलता से व्याप्त हो रहा है (सः उ पूर्वः जातः) निश्चय वह सृष्टि रचना के पूर्व भी विद्यमान था (सः उ गर्भे अन्तः जातः) और सृष्टि रचना के उपरान्त उसके प्रत्येक अंग में विद्यमान होता है (सः एव जातः) वह ही भूत काल में भी था (सः एव जनिष्यमाणः) और निश्चय वह भविष्य में भी होगा (सर्वतः मुखः) सब दिशाओं में उसकी क्रिया शक्ति विद्यमान रहती है (प्रत्यङ्. तिष्ठति) और वह प्रत्येक पदार्थ को प्राप्त हुआ अचल, सर्वत्र स्थिर है ।

भावार्थः—वह पूर्ण अखण्ड अविनाशी ब्रह्म सब दिशाओं और प्रदिशाओं में रम रहा है। सृष्टि के पूर्व भी वह विद्यमान रहता, सृष्टि रचने पर वह सृष्टि के प्रत्येक अंग में रमण करता है। वह भूत, भविष्यत्, वर्त्तमान तीनों कालों में सर्वत्र अचल विद्यमान रहता है । उसकी क्रिया शक्ति सारे ब्रह्माण्ड में निरन्तर कार्य करती है ।

The learned persons should distinctly realise that the lord divine is pervading all the directions. He existed before the world was created and after creation He pervades it harmoniously. He existed in past, He exists in present and He would exist in future as well. He keeps an eye upon every material and non-material object.

यस्माज्जातं न पुरा किंच नैव य आबभूव भुवनानि विश्वा।

प्रजापतिः प्रजया संरराणस्त्रीणि ज्योतिंषि सचते स षोडशी ॥११॥

शब्दार्थः—(यस्मात् पुरा) जिस परमपुरुष से पूर्व (किंच न एव) निश्चय कुछ भी (न जातं) उत्पन्न नहीं हुआ है (यः आबभूव) जो सम्यक् प्रकार से वर्त्तमान है (भुवनानि विश्वा) और जिसमें सारे लोक लोकान्तर समाये हुए हैं निश्चय वह (प्रजापतिः) सकल प्रजाओं का पालक और स्वामी है (प्रजया संरराणः) जो प्रजाओं में रमण करता हुआ (त्रीणि ज्योतिंषि सचते) ज्योतिष्मती ऋतम्भरा व प्रज्ञा बुद्धि सम्पन्न मानवों के हृदयाकाश में तीन तैजस, विज्ञान और आनंदरूपा अपनी ज्योतियों को प्रकट करता है अथवा अग्नि, वायु व आदित्य इन तीन ज्योतियों को उत्पन्न करता है जिनके द्वारा ऋग्, यजुष् व साम वेदों का प्रादुर्भाव होता है (षोडशी च सचते) और वह ही षोडश कलाओं का निर्माण करता है।

भावार्थः—निश्चय वह परम पुरुष परमात्मा सकल लोकों और योनियों की उत्पत्ति से पूर्व विद्यमान रहने वाला है। उससे भिन्न अन्य कोई शक्ति इस ब्रह्माण्ड में नहीं है जो इन लोकों को रचकर धारण कर सके। वह ही इन सब लोकों को रच कर इनमें रमण करता और व्याप्त रहता है। निश्चय वह सब लोकों का आदि स्वामी और पालक है।

ध्यान योग द्वारा मानव उसकी तैजस, विज्ञान एवं आनंदमयी ज्योतियों का साक्षात् करता है। वह परम पुरुष ही निश्चय निम्न षोडश कलाओं का निर्माता है—प्राण, श्रद्धा, आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथिवी, इन्द्रिय, मन, अन्न, वीर्य, तप, मन्त्र, कर्म, लोक और नाम।

He existed before the electrons were transformed into creation. He positively pervades all the regions. He is the controller and protector of all animal beings and He pervades them all. Man well accomplished in meditation percieves the three divine lights known as Tejas, Vigyan and Anand (Divine brightness, divine inspiration and divine blessedness) with the help of Jyotishmati, Ritambhara and Pragya intellects successively or Agni, Vayu, Aditya the three luminaries through whom the three Vedas Rig, Yajur, and Sama are revealed. He is the creator of 16 kalas known as vital, breath, devotion to the Supreme Being, eather, air, heat, water, earth, perceptive and other organs, mind or

intellect, nourishments, sermon, penances, divine aphorisms, persuation for performing noble deeds, regions and animal forms and designations.

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढ़ा येन स्व स्तभितं येन नाकः ।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥१२॥

शब्दार्थः—(येन उग्रा द्यौः) जिसने इस महान् तेज वाले द्युलोक को धारण किया हुआ है (येन पृथिवी च दृढ़ा) जिसने पार्थिव लोकों को दृढ़ी भूत किया हुआ है (येन स्वः स्तभितं) जिसने सुखों को धारण किया हुआ है (येन नाकः) जिसने त्रिविध तापों रहित मोक्ष धाम को धारण किया हुआ है (यः अंतरिक्षे) जो अन्तरिक्षों में (रजसा विमानः) रजोगुणी पदार्थों को विशेष रूप से निर्माण किये हुए है (कस्मै देवाय हविषा विधेम) ऐसे उस आनंदस्वरूप परमात्म देव को तजकर कौन वह देव है जिसकी हम उपासना करें ।

भावार्थः—वह परम पुरुष नाना तेजोमय नक्षत्रों को रचकर धारण करने वाला है और नाना तेजोमय पार्थिव लोकों को रचकर निर्धारित मार्ग चक्रों पर दृढ़ करता है। वही रजोमय अन्तरिक्ष लोकों को रचता वह ही प्राणियों के लिए सुखों का विधान करता और वही मोक्ष धाम को धारण किये हुए है । उस आनन्दस्वरूप परमात्मदेव से भिन्न अन्य कोई हमारा उपास्य देव नहीं है ।

He upholds all the brilliant stars. He alone upholds all the planets and satellites void of inherent light. He is the only sourse of joy and happiness. He is the bestower of divine bless. He also created all the airbelts full of gases. He, the Divine Blissful Lord, is only to be worshipped by us.

यं क्रन्दसी अवसा तस्तभाने अभ्यैक्षेतां मनसा रेजमाने ।
यत्राधि सूर उदितो विभाति कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥१३॥

शब्दार्थः—(अवसा) अपनी महती रक्षण शक्ति द्वारा (यं क्रन्दसी) जिस प्रकाशमान व प्रकाशशून्य विश्व को (तस्तभाने) इस अनंत आकाश में जो धारण किए हुए हैं तथा (रेजमाने) विहित धुरियों और मार्ग चक्रों

पर जो गतिमान रखता है (मनसा अभ्यैक्षेतां) ध्यानयोग द्वारा अथवा

विज्ञान द्वारा सम्यक् प्रकार से ज्ञानी मानव उसका अवलोकन कर अन्तर्बोध प्राप्त करे (यत्र) जिस पावन प्रभु के दिव्य आलोक में (उदितः सूरः) अन्तर्बोध युक्त ज्ञानी मानव (अधि विभाति) सम्यक् प्रकार से शोभायमान होता है ऐसे उस (कस्मै) आनंदस्वरूप (देवाय) दिव्य देव के प्रति (हविषा विधेम) हम अपने जीवन की भेंट चढ़ावें।

भावार्थः—परम पुरुष परमात्मा अपनी महती रक्षण शक्ति के द्वारा इस अनन्त आकाश में असंख्य प्रकाश युक्त एवं प्रकाशशून्य लोकों को रचकर धारण कर रहा है। वही इन सब लोकों को गति प्रदान करता है जिससे यह अपनी-२ धुरी पर गति करते तथा इनमें जो ग्रह-उपग्रह हैं। वह अपने-२ निर्धारित मार्ग चक्रों पर भी गति करते हैं। ऐसे उस पावन प्रभु का दर्शन मानव ध्यान योग के द्वारा भलीभाँति कर सकता है। ज्ञानी मानव उसके पावन तेज से कांति, द्युति व तेज को प्राप्त होता है। हम श्रद्धा समन्वित हो ऐसे उस परम पावन प्रभु को अपनी श्रद्धा की भेंट चाढ़वें।

The Omnipotent Lord upholds all the luminous stars and dark planetss and satellites in the sky by means of His immense prowess and furnishes them with speeds known as rotation and revolution. A man through concentration of mind and deep meditation can perceive His Divine Lusture and can rise high in his life and shine with celestial glory. We pay our hearty benidictions to the Divine Blissful Lord.

आपोह यद् बृहतीर्विश्वमायन् गर्भं दधाना जनयंतीरग्निम्।
ततो देवानां समवर्त्ततासुरेकः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥१४॥

शब्दार्थः—(आपः) विश्व व्यापिनी (यद् ह बृहतीः) जो निश्चय एक अद्भुत चेतना शक्ति है (विश्वं आयन्) जो सार विश्व की सृजना करती (गर्भं दधाना) और इस विश्व के गर्भ आद्या प्रकृति को अपनी सामर्थ्य में धारण करती (जनयन्ति अग्निम्) संसार में गति और तेज को उत्पन्न करती है। (ततः) इन हेतुओं से (देवानाम्) सब दिव्य पदार्थों लोक लोकान्तरों आदि का (एकः असुः समवर्त्तत) वह एक अद्वितीय जीवनाधार स्वामी है (कस्मै देवाय हविषा विधेम) उससे भिन्न किस देव के प्रति हम अपने श्रद्धा सुमनों की अजंलि प्रस्तुत करें।

भावार्थः—विश्व व्यापिनी चेतना शक्ति निश्चय एक अद्वितीय बहुत महिमामयी शक्ति है। वही सम्पूर्ण विश्व को गति देती और प्रलयावस्था में इस विश्व को आद्या प्रकृति के रूप में अपनी सामर्थ्य में धारण करती है। निश्चय वही गति, ज्ञान और तेज की सृजनी है। वह ही संसार के सब लोक लोकान्तरों तथा असंख्य प्राणियों के जीवन का आधार है उससे भिन्न अन्य कोई हमारी उपासना का केन्द्र बिन्दु नहीं है।

The All-pervading Lord is known as unknown sentient World Energy. He creates this universe and keeps it in His Divine prowes when it is in a primitive stage. This evergy is the life of all the luminaries in the world and he alone is worshipful i. e. an object of our benedictions.

यश्चिदापो महिना पर्यपश्यद्दक्षं दधाना जनयन्तीर्यज्ञम् ।
यो देवेष्वधिदेव एक आसीत्कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।१५।।

शब्दार्थः—(यः आपः) जो सर्व व्यापक विश्वचेतना (दक्षं दधाना) अनन्त ईक्षण आदि बलों को धारण करने वाली है और (यज्ञं जनयन्तीः) सम्यक् प्रकार से गति करने वाले यज्ञ रूप इस संसार को उत्पन्न करती है (चित्) निश्चय ही वह (महिमा पर्यपश्यत्) अपनी अपरम्पार महिमा के कारण सब ओर दृष्टि रखने वाली है (यः देवेषु) यह जो कि दिव्य पदार्थों में (एकः अधिदेवः आसीत्) एक अद्वितीय उत्तम गुण कर्म स्वभाव वाली महती चेतना शक्ति है (कस्मै देवाय हविषा विधेम) उससे भिन्न और कौन-सी शक्ति है जिसकी हम उपासना करें।

भावार्थः—अज्ञात विश्व चेतना निश्चय ब्रह्माण्ड में सर्वत्र व्यापने वाली अद्भुत महती शक्ति है। वह अनन्त ज्ञान, बल और कर्मों से युक्त है। विश्वतः चक्षुः होने के कारण सर्व लोक लोकान्तरों व प्राणियों पर अपनी दृष्टि रखती है। उससे कुछ भी ओझल नहीं है। वह प्रत्येक मानव के संकल्प विकल्पों को जानने वाली है। वही जीवों के कल्याणार्थ इस संसार का सृजन करती, देवों में महादेव और दैवी शक्तियों में जगद्धात्री महती शक्ति है। उसकी ही उपासना द्वारा मानव का त्राण हो सकता है। उस पूर्ण आनन्दमयी जगदम्बा को छोड़ कर अन्य किसकी उपासना की जाय।

The all pervading unknown world energy is the eternal abode of all divine knowledge divine prowes and divine actions. He creates the whole univere and keeps her eye on every thing created. Among all the divine forces She is the most Exalted and unique one. We pay our benedictions to that Divine biissful energy.

वेनस्तत्पश्यन्निहितं गुहा सद्यत्र विश्वं भवत्येक नीडम् ।
तस्मिन्निदं सं च विचैति सर्वं स ऽ ओतः प्रोतश्च विभूः प्रजासु ।१६।।

शब्दार्थः—(वेनः) ज्ञानी मानव (तत् सत्) उस नित्य चेतन ब्रह्म को (गुहा निहितं पश्यत्) अपने हृदयाकाश की गुफा में लुके हुए को ज्ञान चक्षु से देखता है (यत्र) जिसमें (विश्वं एक नीडम् भवति) सारा विश्व एक आश्रय वा आश्रमवासी बन जाता है अर्थात् वह परम ब्रह्म ही सब विश्व का स्थायी निवास है (तस्मिन्) उस परम ब्रह्म में (इदं सर्वं) यह सारा संसार (सं एति) प्रलयावस्था में संगत होता है (च वि एति) और सृजन वेला में पृथक्-पृथक् रूप धारण कर लेता है (सः प्रजासु विभूः) वह अपनी समस्त प्रजा में व्याप रहा है (सः ओतः प्रोतः च) और उसके बाहर भीतर सर्वत्र रम रहा है ।

भावार्थः—अविनाशी चेतन ब्रह्म सारे विश्व में रमण कर रहा है । प्रलय काल उपस्थित होने पर यह सारा विश्व नाम रूप से मुक्त होकर अपने आदि कारण प्रकृति में परिवर्तित हो जाता है और सृष्टि अवस्था में नाना रूपों और नाना नामों वाला बन जाता है । इस सकल जड़ चेतन संसार का एकमात्र आश्रय वा आधार वह परम ब्रह्म ही है । उसका साक्षात् मानव को ध्यान योग द्वारा अपनी हृदय रूपी गुफा में होता है । इसी हेतु उसको इस गुफा में विशेष रूप से विराजमान कहा जाता है ।

The Eternal Supreme Being becomes the common abode of the whole universe at the time of dissolution. In Him this universe absorbs and disappears and at the time of creation it becomes visible and it assumeth the various forms. The Lord Divina resides wonderfully in the cavity of the human heart and there alone He can be perceived by due meditation.

प्र तद्वोचेदमृतं नु विद्वान् गन्धर्वो धाम विभृतं गुहा सत् ।
त्रीणि पदानि निहिता गुहास्य यस्तानि वेद स पितुः पिताऽसत् ।।१७।।

शब्दार्थः—(विद्वान् गन्धर्वः) वेद वाणी को धारण करने वाला ज्ञानी मानव (विभृतं गुहा) अपनी बुद्धि में सम्यक् प्रकार से धारण किये हुए (तत् सत् अमृत धाम) उस चेतन परम ब्रह्म के आनंद धाम का (नु प्र वोचेत्) निश्चयात्मक उपदेश देता है (अस्य) इस अविनाशी ब्रह्म के (त्रीणि पदानि) तीन तैजस्, विज्ञान और आनंद पादों को (गुहा निहिता) जो गूढ़ रूप में सदा उसके स्वरूप मे वर्त्तमान रहते हैं (यः) जो ध्यान योग मे रत मानव (तानि वेद) उनको जानता है (सः) वह (पितुः पिता असत्) पिता का पिता अर्थात् साधकों में महान् साधक बन जाता है।

भावार्थः—अध्यात्म ज्ञान का प्रवचन करने वाले ज्ञानी जन को चाहिये कि वह ब्रह्म के तीन तैजस्, विज्ञान तथा आनन्द पादों को ध्यानयोग द्वारा जानकर जिज्ञासुओं को उनका उपदेश देवें। यह तीनों पाद उस परम ब्रह्म के निज स्वरूप में सदा विद्यमान रहते हैं। बिना ध्यान योग सिद्ध हुए उनका बोध नहीं होता। ब्रह्म का तुरीय पाद आनंद ही अमृत है। मृत्यु के भय से छुटकारा दिलाता और अमरत्व प्रदान करने वाला है। जिसने उसे जान लिया वह साधकों में उच्च कोटि का साधक बन जाता है।

A learned Vedic scholar should speak to the deserving persons, the science of spiritualism through which the further three divine hemispheres are manifested in the might of the Lord Divina. One who distinctly perceives them becomes exalted in the science of spiritualism.

स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा ।
यत्र देवा ऽ अमृतमानशाना स्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ।।१८।।

शब्दार्थः—(यत्र तृतीये धामन्) वैश्वानर पाद से ऊपर उदित होने वाले परमात्मा के जिस तृतीय धाम अर्थात् आनंद धाम में (देवाः) ज्ञानी तपोनिष्ठ मानव (अमृतं आनशानाः) मोक्ष सुख का उपभोग करते हुए (अधि एरयन्तः) निर्वाध गति से सर्वत्र विचरते हैं (सः) ऐसा वह परमात्मा (नः बन्धुः) हमारा सखा है, हमें अपने प्रेम पाश में बांधने वाला है (सः नः जनिता) वह हमको उत्पन्न करने वाला है (सः नः विधाता) वह हमारे

लिये सब पदार्थों को उत्पन्न करने वाला और हमको कर्मफल प्रदान करने वाला है (विश्वाधामानि वेद) वह सब जन्म स्थान नामों के जानने वाला तथा(विश्वानि भुवनानि वेद)सर्व लोक लोकान्तरों योनियों आदि को जानने वाला है।

भावार्थः—परमात्म देव हमारा सखा, माता, पिता है। हमारे लिये नाना प्रकार के उपभोगों को प्रदान करने वाला है। वह सर्व लोक लोकान्तरों तथा मनुष्य, पशु, पक्षी, कीट, पतंग आदि योनियों का ज्ञान रखने वाला है। ज्ञानी ध्यानी जन उस दिव्य आनंद स्वरूप परमात्मा के आनंदधाम में मुक्ति को प्राप्त हो निर्बाध गति से अमृत रस का पान करते हुए विचरते हैं।

He the Lord Divina is our mother, father, brother and friend. He has created innumerable articles for us. He knoweth all the different rigions and animal beings. In Him the learned spiritual souls reside and move all round freely enjoying the divine bliss.

परीत्य भूतानि परीत्य लोकान् परीत्य सर्वा प्रदिशो दिशश्च।
उपस्थाय प्रथमजामृतस्यात्मनात्मानमभि सं विवेश ॥१६॥

शब्दार्थः—(परीत्य भूतानि) पृथिवी, अप, तेज, वायु, आकाश आदि भूतों में उसकी अनुभूति लेते हुए (परीत्य लोकान्) नाना सूर्य, बृहस्पति, मंगल आदि लोकों में उसकी सत्ता की अनुभूति लेते हुए (परीत्य सवा: प्रदिशः दिशः च) और सर्व पूर्व-पश्चिमादि दिशाओं तथा प्रदिशाओं में उसकी सत्ता को अनुभव करते हुए (ऋतस्य आत्मानं) सत्यज्ञान के अधिष्ठान का (प्रथमजां) जो मानव सृष्टि के आरम्भ में वेद ज्ञान का प्रकाशक है (उपस्थाय) सम्यक् प्रकार से उसको मन मंदिर में प्रतिष्ठित करें और (आत्मना अभि सं विवेश) अपने शुद्ध अन्तः करण से उसमें प्रवेश करें अर्थात् उसमें तन्मयता को प्राप्त करें।

भावार्थः—इस अविनाशी परम ब्रह्म के उपासक को चाहिये कि वह उसका उपस्थान करने से पूर्व विभिन्न लोक लोकान्तरों की विचित्र रचना को देख कर उसकी सत्ता की अनुभूति लेवें। वायु, अग्नि आदि तत्वों में उसकी महिमा का अनुभव करें। सब दिशाओं और प्रदिशाओं में मनसा परिक्रमा करें और तत्पश्चात् कल्याणी वेद वाणी के स्वामी उस परमात्मदेव का अपने

मन मंदिर में उपस्थान करें और शुद्ध अन्तः करण द्वारा उसमें तन्मयता उपलब्ध करें।

A devotee of the supreme being should first realise His existence in different elements and regions and should further contemplate His glory in all the directions. And then he should perceive the lustre of the Omni-potent Lord, the bestower of divine knowledge, in the cavity of his heart and then totally resign ownself in Him.

परिद्यावापृथिवी सद्य ऽ इत्वा परिलोकान् परिदिशः।
परिस्वः ऋतस्य तन्तुं विचृत्य तदपश्यत्त दभवत्तदासीत् ॥२०॥

शब्दार्थः—(परिद्यावापृथिवी सद्य इत्वा) ध्यान योग की साधना में रत मानव को चाहिये कि वह सिर से लेकर पाँव तक अपने सब अंगों में उस सनातन विश्व चेतना की सत्ता की प्रथम अविलम्ब अनुभूति प्राप्त करे (परिलोकान् सद्य इत्वा) और फिर आँख, नाक, वाक् आदि में जिनके द्वारा हम बाह्य जगत् का ज्ञान उपलब्ध करते हैं, उसकी सत्ता की अनुभूति लेवें (परिदिशः सद्य इत्वा) फिर श्रवण इन्दिय में वर्त्तमान उसकी सत्ता की अनुभूति लेवें तत्पश्चात् (परि .स्वः सद्य इत्वा) हृदयाकाश में विराजमान अपनी आत्मा में समाई हुई उसकी सत्ता का अनुभव करें (ऋतस्य तन्तु विततं विचृत्य) फिर ऋत ज्ञान के तन्तु को जो शब्द के आधार पर आकाश मंडल में तरंगित हो रहा है, उसकी अनुभूति लेवें, तत्पश्चात् (तत् अपश्यत्) उसकी दिव्य ज्योतिः का अपनी आत्मा में दर्शन करें (तत् अभवत्) तत्पश्चात् निज ज्योतिः को उस परम दिव्य ज्योतिः के साथ मिलाने का अभ्यास करें (तत् आसीत्) और अन्त वे ब्रह्मस्थ हो जावें अर्थात् ब्रह्म के साथ तद्रूपता को प्राप्त होवें।

भावार्थः—ध्यान योग की साधना में रत मानव को चाहिये कि वह परम पुरुष परमात्मा की अनुभूति ऊपर से नीचे तक अपने शरीर के समस्त अंगों में करे। अपने नेत्रों नासिकाओं, वाक् आदि में उसकी सत्ता को अनुभव करे और श्रोत्रों में अनुभव करे। तत्पश्चात् अपनी आत्मा में उसकी सत्ता का भान कर उसकी दिव्य ज्योतिः के साथ अपनी ज्योतिः का सामंजस्य स्थापित करे और अन्त में तद्रूपता को प्राप्त होवे अर्थात् पूर्णतया ब्रह्मस्थ हो जावे।

A devotee practicing deep meditation should first realise His existence throughout his body from top to bottom, should realise His existence in perceptive organs and afterwards in his ownself. Thus realising his celestial lustre in it and thus assume perfect harmony and oneness with him during Samadhi.

सदसस्पतिमद्भुतम् प्रियमिन्द्रस्य काम्यम् ।
सनिं मेधामयासिषं स्वाहा ॥२१॥

शब्दार्थः—(सदसः) ऋत ज्ञान, जिसका तन्तु ब्रह्माण्ड में व्याप रहा है, के (पतिं) रक्षक स्वामी को (अद्भुतं) जो अत्यंत आश्चर्यजनक है और जो (इन्द्रस्य प्रियं) इस जीवात्मा का प्यारा सखा है (काम्यं) जो अत्यंत कमनीय और अर्चनीय देव है उसकी कृपा से (सनिं मेधां) सदसत् का विवेचन करने वाली प्रशंसनीय मेधा बुद्धि को (अयासिषं) मैं प्राप्त होऊं और (स्वाहा) उस प्यारे सखा के लिये आत्मसमर्पण करूं।

भावार्थः—साधक का यह प्रयत्न होना चाहिये कि वह ऋत ज्ञान के परम आगार उस दिव्य परमात्म देव की अद्भुत ज्योतिः को लखे। वह परमात्म देव निश्चय ही इस जीवात्मा का शाश्वत सखा है और एकमात्र कमनीय, स्पृहनीय, अर्चनीय है। उस प्यारे सखा की कृपा से सदसत् विवेचनी प्रशंसनीय मेधा बुद्धि को प्राप्त करे जिसके द्वारा जीवात्मा का निस्तार होता है एतदर्थ मानव को ब्रह्म के प्रति आत्मसमर्पण करने का समाधि योग द्वारा अभ्यास करना चाहिये।

Lord Divina is a most Wonderful one. He is the eternal abode of divina knowledge. He is the most lovely friend of soul. By his grace a man should acquire intellect, the gift divina, and should achieve oneness with him in Samadhi Yoga.

यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते ।
तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु ।।२२।।

शब्दार्थः—(यां मेधां) जिस सदसत् विवेचनी बुद्धि .को (देवगणाः उपासते) सिद्ध कोटि को प्राप्त ज्ञानीजन प्राप्त करने का सतत् प्रयत्न करते हैं (पितरः च उपासने) साधना रत मानव भी जिसके लिये यत्न करते हैं (अग्ने) हे ज्योतिः स्वरूप प्राणप्रिय सखा व परमात्मन् (तया मेधया) उस मेधा बुद्धि से (मां अद्य मेधाविनं कुरु) मुझे यथाशीघ्र मेधावी बना दो (स्वाहा) एतदर्थं मेरा यह आत्मसमर्पण है ।

भावार्थः—मानव जीवन में सदसत् विवेचनी बुद्धि ही वह सार तत्व है जिसको प्राप्त करने का सतत् साधना द्वारा मानव को प्रयत्न करना चाहिये । यह मेधा बुद्धि जीवात्मा को उसके चिरन्तन सखा परमात्मा की कृपा से ही उपलब्ध होने वाली है । एतदर्थं ही उस प्राण सखा की सतत् उपासना और उसके प्रति आत्मसमर्पण करना उस मानव का कर्त्तव्य है ।

A devotee should acquire divine intellect-through observance of Vratas. All the world saints and savants had been acquiring it as it is the most essential thing for achieving salvation. A devotee should feelingly request the Supreme Being for its acquirement and should surrender ownself to him.

मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः ।
मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहाः ।।२३।।

शब्दार्थः – (वरुणः मे मेधां ददातु) श्रेष्ठतम एवं कमनीयतम परमात्मदेव मुझे मेधा बुद्धि प्रदान करे (मेधां मे प्रजापतिः अग्निः ददातु) दिव्य प्रकाशस्वरूप विश्वनाथ प्यारा सखा मुझे मेधा बुद्धि प्रदान करे (मेधां में वायुः च ददातु) और वह दिव्य और ज्ञान व गति का केन्द्र पावन प्रभु मुझे मेधा का दान करे (मेधां धाता दधातु में) हमारे इस जीवन का परम आधार वह प्राण प्यारा सखा हमें मेधा से संयुक्त करे (स्वाहा) बस यही मेरी उससे एकमात्र याचना है ।

भावार्थः—वह परम वन्दनीय, दिव्य प्रकाशस्वरूप, विश्वपालक, परमात्म देव जो परमैश्वर्यशाली है और जिसने हमें जीवन प्रदान किया है और जीवन

में प्राप्ति करने की क्षमता प्रदान की है हमें सत् असत् का विवेचन करने वाली बुद्धि प्रदान करे। बस हमारी उससे एकमात्र यही याचना है। हमारी प्रार्थनाओं का एक मात्र यही सार है।

The most praiseworthy lustreful Lord, the centre of world energy and divina forces is the only protector and father of us all. He may bestow upon us Divine intellect so that we may achieve our goal of life. This is the only prayer of us, the devotees of Lord Divina.

इदं मे ब्रह्म च क्षत्रं चोभे श्रियमश्नुताम्।
मयि देवा दधतु श्रियमुत्तमां तस्यै ते स्वाहा ॥२४॥

शब्दार्थः—(इदं मे उभे ब्रह्म च क्षत्रं च) मेरा यह ज्ञान और जीवन को उच्च बनाने वाली साधना (तपश्चर्या) दोनों (श्रियं अश्नुतां) दिव्य कांति को प्राप्त हों (देवा) विभिन्न दिव्य शक्तियों के भण्डार परमात्म देव (मयि) मुझ अपने उपासक के अन्दर (उत्तमां श्रियं दधतु) श्रेष्ठतम आभा ज्योति का आधान करें (तस्यै ते स्वाहा) उस दिव्य आभा वा ज्योति की प्राप्ति के निमित्त ही मेरी यह सब साधना हो।

भावार्थः—गुरुजनों द्वारा उपार्जित ज्ञान तथा तपश्चर्या की साधना का लक्ष्य जीवन में दिव्य कान्ति, आभा, ज्योतिः वा तेज को उपलब्ध करना है। इस निमित्त ही मानव को उस प्यारे जीवनाधार सखा के प्रति आत्म समर्पण करना है।

A devotee should dignify his acquired knowledge and his Yogic pursuits with divine brilliance. May Lord, the centre of all divine qualities restore divine splendour in me. For his achievement specially all my efforts in life should be.

देवोपनिषद्-भूमिका

हमने यहां शुक्ल यजुर्वेद के अध्याय ३६ को देवोपनिषद् के नाम से व्याख्यात किया है। उपनिषदें अध्यात्म ज्ञान के महान् प्रचारक हैं और वेदों में अध्यात्म ज्ञान पर्याप्त मात्रा में विद्यमान है। चारों वेदों के अनेक अध्यायों व सूक्तों को उपनिषदों के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

इस अध्याय में परमात्मदेव को बृहस्पति, भुवनस्पति, सविता सखा, सत्य, मद, इन्द्र, मित्र, वरुण, वृषा, अर्य्यमा, विष्णु, आपः, पावक, शिव, विद्युत्, भूः, भुवः, स्वः, कः, चक्षु आदि नामों से पुकारा गया है। यह शब्द परमात्मा के अनेक गुण कर्मों एवं उसकी शक्तियों के बोधक हैं। पौराणिक एवं पाश्चात्य विद्वानों ने इनको पृथक्-२ देवता माना है सो उनकी स्पष्ट भूल व अनाधिकार चेष्टा है। वेदों में बहुदेवतावाद सर्वथा नहीं है। वेद तो स्पष्ट एक देवतावाद के समर्थक हैं अर्थात् केवल एक परमात्मदेव की पूजा का विधान करते हैं।

इस उपनिषद् में मानवों को अपनी वाक् मनन, प्राण, अपान, दर्शन व श्रवण शक्तियों को बलिष्ठ एवं पवित्र बनाने का उपदेश दिया गया है तथा बुद्धि को शुद्ध और मेधा बनाने का उपदेश है। उस दिव्य महामद (सरूरे वहदानियत) को अपने अन्दर खोजने का भी सन्देश दिया गया है। इसमें परमात्मदेव की दिव्य रक्षण शक्तियों का वर्णन है तो व्यक्तिगत एवं समष्टि-गत मंगलकामना करने का उपदेश है।

रात्रि और दिनों को सुख-शांति दायक बनाने की कामना है तो जलादि तत्त्वों के सत्प्रयोग का उपदेश है।

मातृभूमि को सुख सम्पदा से भरपूर करने और अपने राष्ट्र के समुद्रों की रक्षा एवं राष्ट्र के यातायात के संवर्धन का विधान है। द्यौ, पृथिवी अन्तरिक्ष आदि से शांति उपलब्ध करने, संसार को मित्र की दृष्टि से देखने, स्थिरतायुक्त पवित्र जीवन निर्माण करने और यावज्जीवन दीर्घकालपर्यन्त अदीन रहने का पावन उपदेश है।

मानव जीवन के उत्थान में निश्चय ही इस वेद के अध्याय ३६ का अर्थात् वेदोपनिषद् का महान् योगदान है। इस उपनिषद् के प्रकाशन द्वारा कल्याणी वेदवाणी का प्रसार करना ही हमारा अभीष्ट है। —शिवदयालु

ऋचं वाचं प्रपद्ये मनो यजुः प्रपद्ये साम प्राणं प्रपद्ये ।
चक्षुः श्रोत्रं प्रपद्ये वागोजः सहौजो मयि प्राणापानौ ॥१॥

शब्दार्थः—(मयि प्राणापानौ) मेरे अन्दर प्राण और अपान की शक्तियाँ सह अर्थात् ओजः से युक्त हों (मयि वाक् सह ओजः) मेरी वाचाशक्ति ओजयुक्त हो (ऋचं वाचं प्रपद्ये) मैं परमात्म देव के दिव्य गुणों और कर्मों का बखान करने वाली वाणी से युक्त हो जाऊँ (यजुः मनः प्रपद्ये) मेरा मनन और चिन्तन सदा कर्मयोग से युक्त हो (साम प्राणं प्रपद्ये) मेरी भक्ति और उपासना प्राणप्रिय परम पुरुष से मुझे युक्त कराने वाली हो अथवा मेरा जीवन परम पुरुष की भक्ति व उपासना से सदा युक्त हो (चक्षुः श्रोत्रं प्रपद्ये) मेरा अन्तश्चक्षु दिव्य प्रवचनों के श्रवण से सदा उद्बुद्ध हो ।

भावार्थ :—मानव को सदा प्रणायाम आदि द्वारा प्रयत्नपूर्वक अपनी प्राण शक्ति का संवर्धन करना चाहिये और अपने अपानवायु को बलिष्ठ बनाना चाहिये जिससे शरीर के सब प्रकार के मल सुगमता पूर्वक बाहर निकलते रहें और जठराग्नि प्रदीप्त रहे और कभी अपच आदि रोग न घेरें। मनुष्य की वाणी में ओज हो, उसके कथन में आकर्षण हो जिससे वह श्रोताओं को प्रभावित कर सके। मनुष्य को सदैव अपनी वाणी का सदुपयोग करना चाहिये। प्रभुगुण कीर्तन वाणी का सर्वश्रेष्ठ प्रयोग है। मनुष्य केवल योजना बनाने और संकल्पों के संसार में ही विचरण करने से ऊपर उठकर कर्मयोग में संलग्न रहे। मनुष्य को ईश्वर की भक्ति व उपासना द्वारा आत्मोत्थान करना चाहिये तथा जीवन में दिव्य सुख की अनुभूति लेनी चाहिये। मनुष्य को अपने जीवन में सदा दिव्य प्रवचनों एवं सदुपदेशों के ध्यानपूर्वक श्रवण व मनन द्वारा अतर्न्बोध उपलब्ध करना चाहिये।

A man should always positively maintain and enhance his potential energy and vitality. He should decidedly try to make his speech forceful and magnetic. One should always extol

the qualities of the Super human Being and try to perform noble deeds. One should always devote himself to deep meditation and should always attentively attend the divine sermons and thus make his intuition exalted.

यन्मे छिद्रं चक्षुषो हृदयस्य मनसो वातितृण्णम् ।
बृहस्पतिर्मे तद्दधातु शंनो भवतु भुवनस्य यस्पतिः ॥२॥

शब्दार्थः—(मे चक्षुषः यत् छिद्रं) मेरे नेत्रों में जो दोष, द्वैधिभाव व हीनता है (यत् मे हृदयस्य छिद्रं) और जो मेरे हृदय की निर्बलता है (यत् मे मनसः वा अतितृण्णं) और जो मेरे मन का कठोर काँटा है (बृहस्पतिः तत् दधातु) उसको विश्वपति परमात्मा नाश कर दें या दूर कर दें ।

टिप्पणी—यहां धृङ् अवस्थाने अवध्वंसने वा धातु का प्रयोग है । वा छिदिर द्वैधिकरणे रुधादि गणधातु का प्रयोग है ।

(भुवनस्य यः पतिः) इस समस्त ब्रह्माण्ड का जो स्वामी है वह (नः शं भवतु) हमारे लिये कल्याणकारी हो ।

भावार्थ :—मेरे नेत्रों की निर्बलता, आदि दोषों को तथा द्वैधिभाव को, हृदय के दौर्बल्य व कुटिलता को, मेरे मन की पाप वासनाओं रूपी भूलों को वह परमपिता परमात्मा अपनी कृपा से दूर कर दे ।

May the Great Lord Divina set aside the wickedness of my eyes, weakness of my heart and crookedness of my mind and may the Lord of entire universe restore peace in me.

भूर्भवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात् ॥३॥

शब्दार्थः—(भूः) सनातन सत्तावान (भुवः) दुष्ट, दुर्गण व दुःख दारिद्रय् नाशक (स्वः) सब सुखों का दाता वह आनंदस्वरूप परमात्मा है (तत सवितुः देवस्य) उस दिव्य गुणों के निधान प्रकाश स्वरूप विश्व के सृजनहार प्रभु के (वरेण्यं भर्गः) वरण करने योग्य श्रेष्ठतम दिव्य तेज का (धीमहि) हम ध्यान करते हैं, उसको अपने अन्दर धारण करते हैं (यः)

ऐसा वह परम पुरुष परमात्मा (नः) हम सबों की (धियः) बुद्धियों को (प्रचोदयात्) प्रबुद्ध करे, सत्कर्मों के अनुष्ठान में प्रेरित करे।

भावार्थ :—परमात्मा सत् + चित् + आनंद स्वरूप है। वह शाश्वत, चेतन, सत्तावान व दिव्य आनंद का परम निधान है। हम उस दिव्य गुणों के परम केन्द्र विश्व सृजन हार पावन प्रभु के वरण करने योग्य दिव्य तेज वा उसकी पावनी ज्योति का ध्यान करें, उसका अपने अंदर आधान करें। वह प्राण प्यारा सखा हमारी बुद्धियों को सन्मार्ग पर चलने की क्षमता प्रदान करे।

The Omnipresent Lord Divina is the centre of World energy and abode of divine bliss. We feelingly aspire for His divine lusture. He the creater of whole Universe may lead our intellects to the path of righteousness.

कया नश्चित्र आभूवदूती सदावृधः सखा।
कया शचिष्ठया वृता ॥४॥

शब्दार्थः—वह परम पुरुष (चित्रः) अत्यंत आश्चर्यरूप विचित्र महिमावान् (सदा वृधः) सर्व प्रकार की न्यूनताओं से सदा दूर रहने वाला (सखा) जीवमात्र का शाश्वत मित्र वा बंधु है (कया ऊती) उसकी कौन-सी वह विलक्षण दिव्य महती रक्षण शक्ति है जिसके द्वारा (नः आभुवत्) वह हम सबकी रक्षा करता है (कया) वह परमात्मा अपनी आनंदमयी रक्षण शक्ति से (शचिष्ठया वृता) जो अत्यंत श्रेष्ठ है, सदा संयुक्त रहने वाला है।

भावार्थः—परमात्मदेव की महिमा अपरम्पार है। वह सब प्रकार की न्यूनताओं तथा अज्ञानादि से सदैव दूर रहने वाला है और प्राणीमात्र का चिरन्तन प्रिय सखा है। उसकी रक्षण शक्ति महान् और अपरिमेय है जिसके द्वारा वह सदा सब प्राणियों की रक्षा करता है। निश्चय ही परम पुरुष की रक्षण शक्ति दिव्य और आनंदमयी है।

The glory of Lord Divina is immense and non-imaginable. He is Omnicient and totally free from all ignorance and infirmities. He is the friend and saviour of all souls in the world from eternity. His means of protection are innumerable. He positively protects all the human and animal beings through his blissful prowess.

कस्त्वा सत्यो मदानां मंहिष्ठो मत्सदन्धसः ।
दृढ़ा चिदारूजे वसु ॥५॥

शब्दार्थः—(मदानां मंहिष्ठः) जो मदों में सर्वश्रेष्ठ है (कः) आनंदस्वरूप है (सत्यः) सनातन सत्ता वाले सर्व जड़ चेतन पदार्थों में व्याप्त है (अन्धसः त्वा मत्सत्) नाना अन्नादि पदार्थों से तुझको युक्त करे, सुख सम्पन्न करे (आरूजे) रोगों को दूर करे और (दृढ़ा वसु) पुष्टिकारक अन्न, धनादि को वह (चित्) निश्चय तुझको प्रदान करे।

भावार्थ :—परमात्मा दिव्य सुखों का भण्डार और आनंदस्वरूप है। दिव्य मद (सरूरे वहदानियत) का वह अनुपम सरोवर है। सर्व जड़-चेतन पदार्थों में सदा एकरस विद्यमान रहने वाला है। अपनी सारी प्रजा को अन्नादि भोज्य पदार्थों से युक्त करने वाला है। वह निश्चय ही तुझे आरोग्य कारक पुष्ट अन्न धनादि से युक्त करने वाला है।

Lord Divina is the bestower of divine pleasures and peace. He pervades all sentient beings and non-sentient articles of the world. He is the most delightful one and provideth food as well as worldly pleasures to all animal beings.

अभीषुणः सखीनामविता जरितॄणाम् ।
शतम्भवास्यूतिभिः ॥६॥

शब्दार्थः—हे परम पुरुष परमात्म देव (नः जरितॄणाम् सखीनां) आप हम अपने स्नेही मित्रों की जो आपका स्तवन करते हैं (अभि अविता) सम्यक् प्रकार से रक्षा करने वाले हों (शतं ऊतिभिः) आप अपनी असंख्य रक्षा शक्तियों द्वारा (नः सुभवासि) हमारी रक्षा करने में सदा वर्तमान रहते हो।

भावार्थः—परमात्म देव की रक्षण शक्तियां असंख्य और अपार हैं जो समस्त संसार में फैली हुई हैं। हे प्रभो ! जो जन सच्चे हृदय से आपका गुणगान करते हैं और आपकी उपासना में लीन रहते हैं आप उनके सच्चे बंधु हो और सर्वविधि उनका त्राण करने वाले हो।

O ! Thou Lord Divina yours means of protection are immense and innumeral. Those who extol your great quali-

ties and meditate upon you are worthy of attaining your real friendship and protection.

कया त्वं न ऊत्याभि प्रमन्दसे वृषन् ।
कया स्तोतृभ्य आ भर ।।७।।

शब्दार्थः—(वृषन्) सब ओर से सुखों की वर्षा करने हारे प्रभो ! (त्वं) आप (कया ऊत्या) अपनी आनंददायिनी रक्षण शक्ति द्वारा (नः) हम अपने उपासकों को (अभि प्रमन्दसे) सब प्रकार से आनंद युक्त कर देते हो। दिव्य मस्ती से उन्हें भरपूर कर देते हो (कया) आप निश्चय ही अपनी आनंदवारि की धारा से (स्तोतृभ्यः आभर) अपने भक्तों को सब ओर से सिञ्चित कर देते हो।

भावार्थ—उस परम पुरुष की रक्षण शक्तियाँ सब ओर से श्रेष्ठ मानवों की रक्षा करती हुई उनको दिव्य सुखों से सम्पन्न करतीं और उनको दिव्य मस्ती से सराबोर कर देती हैं। वह हमारा प्यारा सखा तो वृष है अर्थात् अपने आनंदवारिकी धाराओं की सब ओर से हम पर वर्षा करने वाला है। हम सच्चे हृदय से उस प्राणनाथ प्रभु के गुणों का कीर्तन करते और उनको अपने जीवन में धारण करने का प्रयत्न करेंगे तो निश्चय उसकी कृपा से संसार में हमारा कल्याण होगा।

The Omnipotent Lord showers the rain of divine blissfulness upon us. He protects his devotees miraculously and bestoweth them with divine pleasures.

इन्द्रो विश्वस्य राजति शन्नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे ।।८।।

शब्दार्थः—परमैश्वर्यवान् प्रकाशस्वरूप परमात्मा (विश्वस्य) सम्पूर्ण विश्व को (राजति) प्रकाशित करने वाला है। वह (नः द्विपदे शं अस्तु) हमारे पुत्र पौत्रादि परिवार के जनों का कल्याण करे तथा (नः चतुष्पदे शं अस्तु) हमारे गौ आदि उपकारक पशुओं के लिये कल्याणकारी हो।

भावार्थ :—ज्योतिः स्वरूप परमात्मा का शासन संसार के सब प्राणियों पर है। उसके शासन से कोई बाहर नहीं जा सकता। उस प्यारे प्रभु से

हमारी यही विनती है कि वह हमारे पुत्र-पौत्रादि कुटुम्बी जनों को सुख-शांति से युक्त करे और हमारे उपकारक गौआदि पशुओं को स्वस्थ एवं नीरोग रक्खे ।

The Divine Lustreful Lord rules over the whole universe. We pray Him for the welfare and prosperity of our progeny and relations and our cattles as well.

शन्नो मित्रः शं वरुणः शन्नो भवत्वर्य्यमा ।
शन्न इन्द्रो बृहस्पतिः शन्नो विष्णुरुरुक्रमः ।।६।।

शब्दार्थः—(मित्रः नः शं भवतु) प्रेमपाश में बाँधने वाला और मृत्यु के दुःख से छुड़ाने वाला परमात्मा हमारे कल्याण का विधाता हो (नः वरुणः शं भवतु) वरण करने योग्य सर्वश्रेष्ठ परमात्मा हमारा मंगल करे (नः अर्य्यमा शं भवतु) सकल संसार को अपनी व्यवस्था में रखने वाला जगदीश्वर हमारा कल्याण करे (नः इन्द्रः बृहस्पतिः शं भवतु) परमैश्वर्यशाली दिव्य प्रकाश का केन्द्र विश्व का पालनकर्त्ता परमात्मा हमें सुख-समृद्धि से युक्त करे (नः उरुक्रमः विष्णुः शं भवतु) गति का परम केन्द्र सर्वव्यापक ब्रह्म हमें दिव्य सुख-शांति प्रदान करे ।

भावार्थः—परमात्मदेव हमें पतन के गर्त से बचाकर उत्थान की ओर ले जाने वाले हैं वह ही एकमात्र वरण करने योग्य हमारे उपास्य देव हैं। वह प्रभु परम न्यायकारी और संसार को अपने नियन्त्रण में रखने वाले हैं । वह पतित पावन नाथ अतुलित बल तेज के भण्डार हैं और संसार के एकमात्र स्वामी हैं। वह सारे संसार को गति देते और कण-कण में समाने वाले हैं। हम उनका आश्रय ग्रहण कर उनसे ही सुख-शांति की याचना करते हैं !

The Lord Divina always warns us not to perform degrading acts and He also encourages us to tread the path of righteouness. His sway extends to whole universe. The Lord alone is to be worshipped by us all. He is Omnipotent and divine Lustreful. He is the greatest of all, the centre of world energy. He pervades the whole Universe.

शन्नो वातः पवतां शन्नस्तपतु सूर्यः
शन्नः कनिक्रदद्देवः पर्जन्यो अभिवर्षंतु ॥१०॥

शब्दार्थः—(वातः नः शं पवताम्) हमारे लिये वायु सदा सुखकारी बहे (सूर्यः नः शं तपतु) हमारे लिये सूर्य का तपन मंगलकारी हो (कनिक्रदद् देवः पर्जन्यः) घोर गर्जन करता हुआ दिव्य जलों का केन्द्र मेघ (नः शं वर्षंतु) हमारे लिये सुखकारी वर्षा वर्षे।

भावार्थ :—हम स्वच्छ वातावरण निर्माण रूप यज्ञ योग आदि के अनुष्ठान द्वारा वायु को सदा स्वच्छ रक्खें और सूर्य की किरणों का सदुपयोग करते हुए उसके तेज से समुचित लाभ उठावें। घोर गर्जन युक्त मेघ समय-२ पर कल्याणकारी वर्षा करें एतदर्थ हम अपनी वन्य सम्पदा की सदा रक्षा करें। हमारी यह कामनाएँ कर्मयोग एवं पुरुषार्थ से सदा युक्त होवें।

Let the blowing air be always disinfectual and pleasant to us and the rays and light of the Sun be ever benefitial and let the thundering clouds rain afficacious showers over us.

अहानि शं भवंतु नः शं रात्रीः प्रति धीयताम्।
शन्न इन्द्राग्नि भवतामवोभिः शन्न इन्द्रावरुणा रातहव्या।
शन्न इन्द्रापूषणा वाजसातौ शमिन्द्रा सोमा सुविताय शंयोः ॥११॥

शब्दार्थः—(अहानि नः शं भवन्तु) दिन हमारे लिये कल्याणकारी हों (नः रात्रीः शं प्रतिधीयताम्) और रजनियाँ हमारे लिये सुख को धारण करें (इन्द्राग्नी अवोभिः नः शं भवताम्) विद्युत और अग्नि अपनी रक्षक शक्तियों द्वारा हमारे लिये सुखकारी हों (रातहव्या इन्द्रावरुणा नः शं भवताम्) विद्युत् और जल जो अन्नादि भक्ष्य पदार्थों को उत्पन्न करने वाले हैं हमारे लिये कल्याणकारी हों (वाजसातौ इन्द्रापूषणा नः शं भवताम्) विद्युत् और भूमि जो अन्नादि के द्वारा बल को देने वाली है, हमारे लिये हितकारी हों तथा (इन्द्रासोमा शंयोः सुविताय भवताम्) विद्युत् और ओषधि वनस्पतियाँ हमारा जीवन सुख-शांति युक्त बनाने वाली हों।

भावार्थ :—हम दिनों को परिश्रम और परोपकार कर्मों के अनुष्ठान द्वारा अपने लिये सुखमय बनायें तथा रजनियों को विश्राम और आत्म चिंतन द्वारा अपने लिये विशेष शांति के देने वाली बनायें। विद्युत के सत्प्रयोग द्वारा अग्नि, जल, भूमि, अन्न, बनस्पतियों आदि से हम अपने जीवन में अधिकाधिक लाभ उठाने वाले बनें।

Let our days and nights be pleasent and let they afford us peace and tranquillity. Let by the proper scientific use of electrical power we make fire, acqua, earth and food-products more and more beneficient for mankind.

शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभि स्रवन्तु नः ॥१२॥

शब्दार्थः—(देवी: आप:) दिव्य गुण युक्त मेघों से झरने वाला वा कौप्य जल (न: अभिष्ट्ये) हमारे लिये इष्ट सुखों की वृद्धि के हेतु हो (न: पीतये) तथा हमारी पिपासा शांति के लिये (भवन्तु) होवें (न: शंयो: अभिस्रवन्तु) हमारे लिये सुखों की वृष्टि चहुं ओर से करे।

भावार्थः—घोर गर्जन के साथ बरसने वाला मेघ हमारे लिये पूरा-२ मंगल करने वाला होवे। उत्तमोत्तम वनस्पति, शाक, फल, अन्न और औषधियों को हमारे लिये उत्पन्न करे। इस जल का पान हमारे शरीरों को नीरोग बनावे। वार्षिकी जल निश्चय हमारे लिये सर्व प्रकार से सुखकारी है।

Let the rainy water pouring from the thundering clouds be conducive for our agricultural and botanical product. This aqua may restore in us a sound health.

स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी।
यच्छा नः शर्म सप्रथाः ॥१३॥

शब्दार्थः—(सप्रथा:) दीर्घ विस्तार वाली (अनृक्षरा निवेशनी) खड्डों और कांटों से रहित निवास के योग्य (पृथिवी) भूमि (न: स्योना आभव) हमारे लिये सब प्रकार से हितों के करने वाली हो (न: आ यच्छ शर्म:) और हमें सब प्रकार से सुखी करे।

भावार्थ :—ईश कृपा से यह खड्ड आदि से रहित विस्तार युक्त भूमि माता हमारे लिये सुखद निवास वाली और हर प्रकार से लाभ पहुँचाने वाली हो।

Let by the grace of Divine Lord this mother earth of vast extentions and dimensions void of holes and pits procure for us comfortable residence and abundant food products.

आपो हिष्ठा मयोभवस्ता न ऊर्जे दधातन।
महे रणाय चक्षसे ॥१४॥

शब्दार्थः —(नः आपः) हमारे राष्ट्रीय सागर के जल (महे रणाय चक्षसे) महान् गति और यातायात के साधन हों (नः) और हमारे लिये (मयोभुवः हि ता) सुख सम्पदा से सदा युक्त हों (नः ऊर्जे दधातन) और हमारे राष्ट्र को बलशाली बनावें।

भावार्थ :—राष्ट्रीय सागर निश्चय राष्ट्र की रक्षा के विशेष हेतु हैं तथा प्रगति एवं यातायात के प्रबल साधन हैं। राष्ट्रीय सागर निश्चय राष्ट्र को बलवान् बनाते और उसको सुख सम्पदा से युक्त करने वाले हैं।

The territorial waters of our country are to be protected most cautiously and carefulty. They are decidedly much condusive to the prosperity of our mother earth. They afford means of communication, export and import.

यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः।
उशतीरिव मातरः ॥१५॥

शब्दार्थः—(वः) हे प्रभो ! आपका (यः) जो (रसः) गर्जन करता हुआ सागर का जल है (शिवतमः) वह सर्वाधिक सुखों को पहुंचाने वाला है (तस्य इह नः भाजयत) हे प्रभो ! उसको हमारे इस राष्ट्र की सेवा करने वाला बना दो (मातरः उशतीः इव) निश्चय वह माता के दुग्ध समान हमारे राष्ट्र के जीवन की रक्षा करे।

भावार्थ :—हमारे राष्ट्र के सुरक्षित सागर निश्चय हमारा विशेष मंगल करने वाले हैं। राष्ट्र को नाना सुखों से युक्त करते और माता के दुग्ध के समान राष्ट्र के बल को बढ़ाते हैं।

The surrounding territorial waters of our mother country are positively conducive for her prosperity. They are decidedly cause of political power of our nation just like the milk of a mother to her children.

टिप्पणी:—इन्हीं मन्त्रों के आधार पर आचार्य पारस्कर ने अपने गृहस्थ सूत्र १।३।१३ पर "अरिष्टा अस्माकं वीरा मा परासेचि मत् पयः" लिखा और अर्घ्य प्रदान वेला में इनका विनियोग किया है।

तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ ।
आपो जनयथा च नः ॥१६॥

शब्दार्थः—(वः) ऐ हमारे राष्ट्र के शत्रुजनों (यस्य क्षयाय) हमारे जिस राष्ट्रीय सागर को तुम अपना अड्डा (जिन्वथ) बनाना चाहते हो (तस्मै) उसको हम (अरं गमाय) अपनी पूरी शक्ति के साथ सुरक्षित रक्खेंगे (नः आपः आ जनयथ) और अपने राष्ट्र के सागरों को सर्व प्रकार से राष्ट्र का हित साधने वाला बनावेंगे।

भावार्थः—शत्रु राष्ट्र हमारे राष्ट्रीय सागरों को अपना अड्डा बनाना चाहते हैं। हम उनको ऐसा सर्वथा न करने देंगे और पूरी शक्ति के साथ उनकी रक्षा करेंगे और किसी भी प्रकार से अपना अधिकार उन पर से ढीला न होने देंगे। यह राष्ट्र के सागर तो हमारे राष्ट्र की सुरक्षा व सुख-सम्पदा के प्रबल हेतु हैं

Foreign countries intend to make their bases on our territorial waters and our adjoining seas, we will resist them with full force. These waters are really the source of our national prosperity.

द्यौः शान्तिरन्तिरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः ।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शांतिरेधि ॥१७॥

शब्दार्थः—(द्यौः शान्तिः) संसार के सब प्रकाशयुक्त लोक हमारे लिये शान्ति-दायक हों (पृथिवीः शान्तिः) सब पार्थिव लोक हमारे लिये शान्ति देने वाले हों (अन्तरिक्षं शान्तिः) पार्थिव लोक के वातावर्त्त शान्ति देने वाले हों (आपः शान्ति) मेघ, सागर, नदी, सरोवरादि के जल हमें शान्ति के प्रदान करने वाले हों (ओषधयः शान्तिः) नाना प्रकार के अन्न, मसाले,

शाक, कन्दमूल फलादि हमारे लिये शान्तिदायक हों (वनस्पतयः शान्तिः) वन, विटप, कान्तार हमारे लिये शान्ति प्रदाता हों (विश्वेदेवाः शान्तिः) संसार के ज्ञानीजन हमारे जीवनों में शान्ति सरसाने वाले हों (ब्रह्मशान्तिः) आध्यात्मिक एवं आधिभौतिक ज्ञान हमारा कल्याण करने वाले हों (सर्वं शान्तिः) निश्चय यह सब कुछ हमारी शान्ति के कारण हों (शान्तिः एव शान्तिः) हम आदर्श शान्ति के उपलब्ध करने वाले बनें (सा शान्ति मा एधि) इस प्रकार की सर्वतोमुखी आदर्श शान्ति मुझे जीवन में उपलब्ध होवे।

भावार्थ :—मानव को चाहिये कि वह पारिवारिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय जीवन में सब प्रकार की शान्ति उपलब्ध करने वाला बने। सूर्य, ध्रुव, अश्विनी आदि नक्षत्र हमारे लिये शान्तिदायक हों तो पृथिवी, मंगल, शनि, चंद्रादि निज प्रकाश शून्य लोक हमें शान्ति प्रदान करें। हमारी भूमि का वातावर्त्त शान्ति का देने वाला हो। हमारे राष्ट्र के सागर नदी, सरोवर एवं वर्षा का जल शान्ति के दाता हों। राष्ट्र में उत्पन्न होने वाले अन्न, शाक, कन्द मूल फलादि शान्ति देने वाले हों। वन-वृक्ष शान्ति प्रदाता हों। संसार के ज्ञानी मानव हमारे जीवन को अपने ज्ञान से चमत्कृत करें। हमारा ज्ञान हमें श्रेय पथ का पथिक बनाने वाला हो। हमें जीवन में त्रिविध आदर्श शान्ति उपलब्ध हो।

All these shining stars, planets satallites may bestow peace upon us. The air belt of our mother earth may always protect us. Our roaring territorial waters, our rivers and the rains from thundering clouds may restore peace upon us. All our national products and forests may become source of our prosperity. Let all world seers and teachers may show us path of achieving ideal peace and prosperity. The knowledge we acquire may become a source of our spiritual, mental and physical developments. We may acquire all round prosperity that is the real prosperity in our life.

दृते दृंह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्। मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे॥१८॥

शब्दार्थः—(दृते) हे अविद्यान्धकार विनाशक, अचल-अविनाशी प्रभो! (मा दृंह) मुझे स्थितप्रज्ञ बना दो, मुझे जीवन में ध्रुव लक्ष्य वाला बना दो

जिसके कारण (सर्वाणि भूतानि) संसार के सब प्राणी (मित्रस्य चक्षुषा मा समीक्षन्ताम्) मित्र की दृष्टि से मुझे देखने वाले बन जायें और मैं भी (सर्वाणि भूतानि मित्रस्य चक्षुषा समीक्षे) सब प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखने वाला बन जाऊँ (मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे) हम सब संसार के प्राणी आपकी कृपा से परस्पर एक दूसरे को मित्र की दृष्टि से देखने वाले बन जायें।

भावार्थ :—मानव को अपने जीवन में स्थित प्रज्ञता व ध्रुव लक्ष्यता धारण करनी चाहिये और हमें अपना राष्ट्र दृढ़ संकल्प युक्त एवं शक्तिशाली बनाना चाहिये जिससे संसार के सब राष्ट्र हमारे राष्ट्र को मित्र की दृष्टि से देखने वाले बन जायें। हमें भी दूसरे राष्ट्रों को अपना सच्चा मित्र बनाना चाहिये। संसार की सब जातियाँ एक भ्रातृत्व के सूत्र में बँध जायें, ऐसी हमारी भावना सदैव रहनी चाहिये।

We should become a nation of resolute and strong character so that the other nations of the world may aspire for our friendship and alliance. Dividedly we should also be friendly towards them and thus all the world nations may become friendly towards each other in real sense.

दृते दृंह मा ज्योक्ते संदृशी जीव्यासं।
ज्योक्ते संदृशि जीव्यासम् ॥ १९ ॥

शब्दार्थः—(दृते) हे अविद्या अंधकार विदारक पावन प्रभो (मा दृंह) मुझे स्थिर व संयमी जीवन वाला बना दो जिससे मैं (ते संदृशी ज्योक् जीव्यासम्) आपके प्रदर्शित मार्ग पर निरन्तर दृढ़तापूर्वक आगे ही बढ़ता रहूँ (ते संदृशी ज्योक् जीव्यासम्) निश्चय मैं आपके प्रदर्शित पथ पर जीवन में निरन्तर गति करता रहूँ।

भावार्थ :—स्थित चित्त संयमी मानव ही श्रेयः मार्ग पर दृढ़तापूर्वक प्रगति कर सकता है। ऐसे मानव को देवयान का पथिक बनने के लिये परमात्मदेव से दिव्य बल की याचना करते रहना चाहिये।

O Thou Omnipotent Lord be kind enough to remove my ignorance and fickleness of mind. By Thy grace I may

become a man of strong character and restraind life so that I may tread constantly the divine glorious path in my life time.
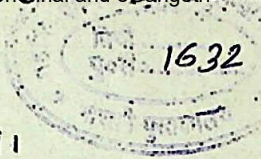
नमस्ते हरसे शोचिष नमस्ते अस्त्वर्चिषे ।
अन्यांस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यं शिवो भव ॥२०॥

शब्दार्थः—(हरसे) पाप वृत्तियों का नाश करने वाले (शोचिषे) अत्यन्त पवित्रता-कारक परमात्म देव के प्रति (नमस्ते अस्तु) मैं सादर वन्दन करता हूँ (नमस्ते अस्तु अर्चिषे) ज्योतिः स्वरूप वन्दनीय देव के प्रति मेरा सादर नमस्कार है (ते हेतयः) आपके दण्ड की धारायें (अस्मत् अन्यात्) हमसे भिन्न दुष्ट दुर्जनों को (तपन्तु) सन्तप्त करने वाली हों (पावकः) पवित्रता कारक परमात्म देव (अस्मभ्य शिवः भव) हम अपने उपासकों का कल्याण करने वाले होवें ।

भावार्थ :—परमात्मा पापवासनाओं तथा दुष्ट दुर्गुणों का नाश करने वाला है । वह हमारे जीवन में पवित्रता का संचार करने वाला है । वह ज्योतिः स्वरूप एवं वन्दनीय है । हम श्रद्धा समन्वित हो उसकी वन्दना करते हैं । उस परम न्यायकारी दिव्य देव की दण्ड व्यवस्था से कोई बचकर नहीं जा सकता । हमारी यही कामना है कि वह दुष्ट दुरात्माओं को सन्तप्त करे । परम पुरुष पवित्रता का करने वाला दिव्य अग्नि स्वरूप है । हमारी उस प्यारे प्रभु से यही विनती है कि वह हमारे ऊपर सुख-शान्ति की वर्षा करे ।

The Lord divina is the annihilator of all worldly evils and the sanctifier of the human race. We devoteldy pay our benedictions to the most lustreful Lord. This divine rod of justice may set at right all the evil doers. We pray Him to make our lives sublime.

नमस्ते अस्तु विद्युते नमस्ते स्तनयित्नवे ।
नमस्ते भगवन्नस्तु यतः स्वः समीहसे ॥२१॥

शब्दार्थः—(भगवन्) हे दिव्य ऐश्वर्यों के भण्डार स्वामिन् ! (यतः स्वः समीहसे) आप हमारे लिये दिव्य सुखों के प्रदान करने वाले हों अतः हमारा

(ते विद्युते नमः अस्तु) ज्योतिः स्वरूप आपको सादर अभिवादन है (स्तनयित्नवे ते नमः अस्तु) विद्युत के समान हमारे हृदयों में कौंधने वाले प्रभु आपको हमारा सादर प्रणाम है। प्रभो (नमस्ते) आपको श्रद्धा समन्वित हो हम नमन करते हैं।

भावार्थ :—परमात्म देव विद्युत के समान हमारे हृदयों के मन्दिर में प्रकाश करने वाले अपनी दिव्य आभा को चमत्कृत करने वाले हैं। वह हमें दिव्य सुख प्रदान करने वाले हैं, अतः हम बारम्बार श्रद्धा युक्त होकर उनका वन्दन करते हैं।

The most Lustreful Lord enshines our hearts with His divine light. He is the master of the world prosperity. We pay devotedly our benedictions to Him.

यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु।
शन्न कुरु प्रजाभ्यो ऽभयं नः पशुभ्यः ॥२२॥

शब्दार्थः—हे परम पावन प्रभो ! (यतः यतः समीहसे) जिस-जिस लोक में आप पशु-पक्षी मानवादि का सृजन कार्य करते हो (ततः ततः) उस-उस लोक में (नः अभयं कुरु) हमें निर्भयता पूर्वक गति करने की क्षमता प्रदान करो (नः प्रजाभ्यः शं कुरु) प्रभु हमारे प्रजाजनों का कल्याण करो (नः पशुभ्यः अभयं कुरु) और हमारे गोआदि उपकारक पशुओं को रोग रहित दीर्घ जीवन प्रदान करो।

भावार्थ :—परमात्म देव का सृजन कार्य निरन्तर ब्रह्माण्ड के किसी न किसी लोक में चलता रहता है। हम विज्ञानादि की सहायता से निर्भयता पूर्वक वहाँ गति कर सकें, ऐसी क्षमता प्रदान करो। प्रभु हमारे पुत्र-पौत्रादि प्रजाजनों को सुखमय जीवन प्रदान करो और हमारे गौ, अश्व, अज आदि पशुओं को नैरोग्य एवं दीर्घ जीवन प्रदान करो।

The creation of human and animal beings is constantly conducted by the Supreme Being in one or the other part of the Universe. The deep scientific knowledge may afford us the capacity of reaching there fearlessly. The Lord may protect our progeny and cattles from diseases and infirmities.

सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु।
दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु यो ऽस्मान् द्वेष्टि यञ्च वयं द्विष्मः ॥२३॥

शब्दार्थः—(नः आपः ओषधयः) जल तथा अन्नादि पदार्थ हमारे लिये (सुमित्रियाः सन्तु) मंगलकारी हों तथा (यः अस्मान् द्वेष्टि) जो समाज वा राष्ट्र के प्रति द्वेष करता है तथा (यं च वयं द्विष्मः) समाज वा राष्ट्र जिसकी संस्कृति वा राष्ट्र के प्रति द्रोही होने के कारण द्वेष करता है (तस्मै दुर्मित्रियाः सन्तु) उसके लिये अन्न, ओषधियाँ, जलादि विनाश के करने वाले हों।

भावार्थ :—संसार के श्रेष्ठ धर्मात्मा सज्जन पुरुषों को परमात्मा सुखकारी अन्न-औषध आदि प्रदान करता है और जो व्यक्ति राष्ट्र, धर्म व संस्कृति के द्वेषी हैं उनका इन्हीं औषध-जल आदि से क्षय कर देता है।

These waters and foods be wholesome and conductive to our health and to the persons who are wicked and harmful to the society, to the nation and to our culture, these very foods and waters may become means of their destruction.

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्र मुच्चरत्।
पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं शृणुयाम शरदः शतं
प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः
- शतात् ॥२४॥

शब्दार्थः—(तत् देवहितं) वह परमात्म देव दिव्य गुण युक्त ज्ञानी जनों का सदा हित करने वाला है (पुरस्तात् शुक्रं उच्चरत्) सृष्टि रचना के पूर्वकाल से उत्कृष्ट ज्ञान वा गति का देने वाला है (चक्षुः) सबको देखने वाला दिव्य-दर्शन शक्ति समन्वित है और (शुक्रं) अत्यन्त पवित्र दिव्य तेज वाला है (पश्येम शरदः शतम्) हम उस दिव्य देव की कृपा से १०० वर्ष पर्यन्त पवित्र दर्शन शक्ति से युक्त हों (जीवेम शरदः शतम्) १०० वर्ष पर्यन्त प्राणों के धारण करने वाले बनें (शृणुयाम शरदः शतम्) १०० वर्ष पर्यन्त श्रवण शक्ति से युक्त रहें (प्रब्रवाम शरदः शतम्) पवित्र वाक् शक्ति से १०० वर्ष तक युक्त रहें। अर्थात् सदा तत्त्वज्ञान का प्रवचन करने वाले बनें (अदीनाः स्याम शरदः शतम्) १०० वर्ष पर्यन्त दीनता रहित जीवन व्यतीत करने वाले बनें (भूयः च शरदः शतात्) तथा

१०० वर्ष [illegible] तक हम देखने, जीने, सुनने, बोलने की शक्तियों से युक्त होकर स्वतंत्रता पूर्वक जीवन यापन करने वाले बन जायें।

भावार्थ :—ज्ञानी विद्वानों का सर्वथा मंगल करने वाला वह दिव्य ज्ञान व दर्शन शक्ति का केन्द्र परमात्मा है। जो दिव्य तेजस्वरूप और अत्यन्त पवित्रतायुक्त है, वह तो अनादि काल से विद्यमान है और हम जीवों का परम सखा है। उसकी कृपा से हम १०० वर्ष तक तथा उससे भी अधिक समय तक दर्शन, जीवन, श्रवण व प्रवचन आदि शक्तियों से युक्त हों और सदा आधिभौतिक तथा आध्यात्मिक स्वतन्त्रता से युक्त होकर जीवन व्यतीत करने वाले बनें।

He keeps an eye on the entire universe and He is the benefactor of all the divine souls. He ever existed as divine light before the world came into existence.

We aspire to perceive Him throughout our hundred yea's life. We aspire to listen to His glory with devotion and faith in our whole life. We resolve to propagate His commands throughout our whole life and through His grace we aspire to live a free blissful life of Hundred and more years.
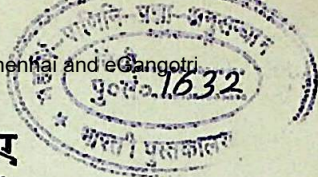
प्रचार के लिए

आकर्षक वैदिक साहित्य

1. Light Of Truth : अंग्रेजी सत्यार्थ प्रकाश

महर्षि दयानन्द के महान् ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश का मास्टर दुर्गाप्रसाद कृत यह अनुवाद प्रत्येक दृष्टि से अनुपम है। छपाई, कागज जिल्द सभी दृष्टि से अत्यन्त आकर्षक यह ग्रंथ लागतमात्र पर दिया जा रहा है। पृष्ठ ५७८। साइज डिमाई आठवां —मूल्य १०)। कपड़े की जिल्द १२)।

2. Life and Teachings of Swami Dayanand Rs. 10-00

महर्षि का अंग्रेजी जीवन चरित्र

बावा छज्जूसिंह द्वारा लिखित अनमोल ग्रंथ महर्षि के जीवन पर अनुपम प्रकाश डालता है। स्व० पं० लेखराम द्वारा संग्रहीत सामग्री के आधार पर तैयार यह जीवन अपने ढंग का अनुपम है। इसमें देश-विदेश के नेताओं द्वारा दी गई श्रद्धांजलियां महर्षि के जीवन की प्रमुख घटनाएँ : प्रमुख शास्त्रार्थ और ३४ पृष्ठ आर्ट पेपर चित्र १६ रंगीन चित्र आकर्षक पूरी कपड़े की जिल्द अपने ढंग की आप ही है। भेंट के लिए सर्वोत्तम पृष्ठ ४२२। साइज डिमाई-आठवां— मूल्य १०) मात्र।

3. TEACHINGS OF SWAMI DAYANAND

—मूल्य ७५ पैसे

महर्षि दयानन्द की विचार धारा और शिक्षाओं से सभी को परिचित कराने के लिए अनुपम पुस्तक।

4. TEN COMMANDMENTS Rs. 1.00

आर्यसमाज के १० नियमों की अभूतपूर्व व्याख्या : स्व० पं० चमूपतिजी की लेखनी से। मूल्य १)

5. Message of the Arya Samaj to the Universe

भारतेन्द्र नाथ साहित्यालंकार लिखित—आर्यसमाज का संदेश फैलाने हेतु प्रभावशाली पुस्तिका—जिसका ८ भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। ३० पैसे

6. VEDIC-PRAYER

संध्या, प्रार्थना मंत्र, हवन, स्वस्तिवाचन, शांतिप्रकरण ईशोपनिषद् आदि

सभी की पूर्ण व्याख्या हिन्दी और अंग्रेजी में एक साथ और चुने हुए भजन—
भेंट के लिए अत्युत्तम मूल्य २) ५०

7. DAYANAND THE GREAT (दूसरा नया संस्करण)
पं० वेद मित्र ठाकुर लिखित प्रभावशाली ट्रैक्ट मूल्य १५ पैसे

8. An Introduction to the Arya Samaj (नया संस्करण)
आर्य समाज से सभी को परिचित कराने के लिए प्रभाव शाली ट्रैक्ट १५ पैसे

9 The Great Gaytri मूल्य २० पैसे १५) सैकड़ा
गायत्री मंत्र का यह सुन्दर अंग्रेजी अनुवाद प्रत्येक दृष्टि से आकर्षक है।
७५) रिम के सर्वश्रेष्ठ कागज़ पर रंगीन मोहक छपायी

10. The Vedic Fundamentals 2·50
वैदिक धर्म के मूल सिद्धान्त समझने हेतु प्रभावपूर्ण मार्ग दर्शन

१०. वैदिक सत्संग पद्धति (हिन्दी) नया संस्करण मूल्य ६० पैसे
केवल हिन्दी में इसमें प्रत्येक मंत्र के साथ उसका अर्थ दिया गया है। २८ पौंड बढ़िया कागज, तिरंगा बढ़िया आवरण, महर्षि का तिरंगा चित्र। चुने हुए भजन। ८४ पृष्ठ। मूल्य ६० पैसे। ५० रु० सैकड़ा।

१२. योगेश्वर कृष्ण मूल्य ४० पैसे
योगेश्वर कृष्ण—भगवान् कृष्ण का यह जीवन चरित्र लाखों व्यक्तियों तक पहुँचाना चाहिए। ब्र. जगदीश विद्यार्थी एम. ए, लिखित।

१३. क्रांतिकारी दयानन्द मूल्य ७५ पै०
युग प्रवर्तक दयानन्दके क्रांतिकारी स्वरूप से सभी को परिचित कराने हेतु पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। प्रोफेसर संतराम एम०एससी० लिखित।

१४. धर्म ग्रंथावलोकन १·५०
संसार के प्रमुख धर्म ग्रंथों का प्रामाणिक परिचय

१५. गीत मंजरी—नया संस्करण १)
ईश्वर भक्ति के गीत और प्रभु से प्रार्थना करते हुए यदि आप सचमुच अपने आप को भुलाना चाहते हैं तो "गीत-मंजरी" का सहारा लीजिए।

१६. अमृत-पथ (सजिल्द) २)

१७. वेद-ज्योति ४०० मंत्रों का अर्थ सहित संग्रह, मूल्य ३)।

१८. प्रार्थना मंत्र व्याख्या मूल्य ४० पैसे
हरिशरण जी सिद्धांतालंकार लिखित प्रार्थना मन्त्रों की अनुपम व्याख्या।

१९. भारत की अवनति के ७ कारण

ब्र० जगदीश एम० ए० की लोह लेखनी द्वारा लिखित। पृष्ठ ६८।
मूल्य ५० पैसे। ३५) सैकड़ा।

२०. वैदिक-अध्यात्म-ज्योति मूल्य २)

२१. योग-जीवन मूल्य २)

योग का हमारे जीवन में जो महत्त्वपूर्ण स्थान है उस का हृदयग्राही वर्णन ग्रंथ की अपनी विशेषता है। आसन, प्राणायाम, यम और नियम को हृदय पटल पर अंकित करने में सूक्ष्म ग्रंथ प्रत्येक दृष्टि से उपादेय है।

२२. नीति-दोहावली मूल्य ८० पैसे

प्रत्येक आवश्यक विषय पर उपयोगी दोहे-कविताएँ और प्रमाण जीवन के संदर्भ में प्रेरक मार्ग दर्शन —आचार्य जगदीश विद्यार्थी द्वारा संग्रहीत।

२३. ज्ञान-ज्योति ४०० पेजों का भाष्य मूल्य ३)

२४. माँ-गायत्री १)

१०१ गायत्री मंत्रों का पाठ आपके मस्तिष्क को भी बुद्धि देगा। स्वाध्याय के लिए अनुपम।
पं० शिवदयालु कृत

२५. वैदिक-सिद्धान्त २)

वैदिक सिद्धान्त अकाट्य हैं। यह स्वयंसिद्ध बात ग्रंथ पढ़ कर हृदयंगम हो जाती है। आर्य समाज के सुप्रसिद्ध विद्वान श्रद्धेय पं० यशपाल सिद्धान्तालंकार की विद्वत्ता, प्रतिभा का चमत्कार देख आप मुग्ध हो जाएंगे। प्रत्येक दृष्टि से अनुपम।

२६. आर्यसमाज के नियम ८० पैसे

ज्ञान की अनुपम खोज : महर्षि के शिष्य पं० मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या द्वारा लिखित : पहला संस्करण १८९७ में छपा था। आर्य समाज को जानने-समझने का अपूर्व साधन है।

२७ लाल-आँधी ८० पैसे

कम्यूनिज्म क्या है, कैसा है यह क्या करेगा इसका असली रूप महात्मा नारायण स्वामी, वैद्य गुरुदत्त और श्री चिरंजीलाल प्रेम की प्रभावपूर्ण लेखनी द्वारा प्रचार के लिये प्रस्तुत है।

२८ धर्म–चिन्तन २)

धर्म, ईश्वर, आत्मा और परमात्मा का प्रभावपूर्ण सरल चित्रण श्री ओमप्रकाश त्यागी द्वारा लिखित। पहली बार, अपने ढंग की अनूठी पुस्तक।

२९ दहला [illegible] हो गया ८० पैसे

पौराणिक प्रलाप का मुँह तोड़ उत्तर पं० शान्तिप्रकाशजी द्वारा प्रस्तुत

३० वैदिक विचारधारा २५ पैसे

३२ वैदिक भक्तिवाद २० पैसे १५) सैकड़ा

भक्ति का रस बरसे तो जीवन सरसे, इसे पीने पिलाने के लिए पुस्तक उपस्थित है।

३३ विश्व को आर्यसमाज का सन्देश १५) सैकड़ा

१०) सैकड़ा के उपयोगी प्रचार ट्रैक्ट

३४ आर्यसमाज क्या मानता है ?	—मदनमोहन विद्यासागर		
३५ विश्व को वेद का सन्देश—	—भारतेन्द्र नाथ		
३६ महर्षि दयानन्द की विशेषताएं	—महात्मा नारायण स्वामी		
३७ आर्यसमाज की विचार धारा—	—गंगा प्रसाद उपाध्याय		
३८ आर्यसमाज की मान्यताएं—	—पं० रामचन्द्र देहलवी		
४० आर्य कौन ?	—रघुनाथ प्रसाद पाठक		
४१ आर्यसमाज के दस नियम	—रघुनाथ प्रसाद पाठक		
४३ ईसाई पादरी उत्तर दें।	—स्वामी श्रद्धानन्द	३)	सैकड़ा
४४ A challenge to the Christian Faith		३)	सैकड़ा
४५ Bible in the Balance	चार्ल्स स्मिथ	१५)	सैकड़ा
४६ ज्ञान विज्ञान का शत्रु ईसाई मत	—ओमप्रकाश त्यागी	१०)	सैकड़ा
४७ पोप की सेना का भारत पर हमला	—भारतेन्द्रनाथ	१०)	सैकड़ा
४८ ईसाइयों की प्रचार प्रणाली	—जगत्कुमार	१०)	सैकड़ा
४९ पादरियों को चुनौती	स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती	१०)	सैकड़ा
५० बाइबल को चुनौती	—ओमप्रकाश त्यागी	१५)	सैकड़ा
५१ और पादरी भाग गया	—ओमप्रकाश त्यागी	१०)	सैकड़ा
५२ ईसाइयत की वास्तविकता	—शांतिप्रकाश महोपदेशक	१०)	सैकड़ा
५३ बाइबल कसौटी पर	—चार्ल्स स्मिथ	१५)	सैकड़ा

जन-ज्ञान प्रकाशन

१५९७, हरध्यानसिंह मार्ग, नई दिल्ली-५

मुद्रक—प्रकाशक—संपादक पंडिता राकेश रानी द्वारा नरेन्द्र प्रेस, दिल्ली में मुद्रित।

ओ३म् भूर्भुवः स्वः
तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात् ।